OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 20 जनवरी-II-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन के डायमण्ड हॉल में उपस्थित विशाल सभा ने दी...

दिवंगत सीडीएस बिपिन रावत व सैनिकों को भावभीनी श्रद्धांजलि

बिपिन रावत अंत तक देश की सेवा करते हुए शहीद हुए : विधायक जगसीराम कोली

बिपिन रावत सेना के मनोबल तथा देश की सुरक्षा के लिए हमेशा कटिबद्ध रहे : ब्र.कु. बृजमोहन

शांतिवन-आबू रोड। तमिलनाडू के कुन्नूर में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में देश के पहले सीडीएस बिपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत के साथ सेना के 12 अन्य ऑफीसर्स एवं जवानों का निधन हो गया। इनकी आत्मा की शांति के लिए ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन परिसर के डायमण्ड हॉल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सभी ने कैंडल जलाकर नम आँखों से शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर आबूरोड रेवदर विधायक जगसीराम कोली ने कहा कि देश के पहले सीडीएस बिपिन रावत अंत तक देश की सेवा करते हुए शहीद हुए। इससे देश को बहुत क्षति हुई है। ब्रह्माकुमारी संस्थान के महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि सेना का मनोबल तथा देश की सुरक्षा के लिए हमेशा वे कटिबद्ध रहे। ऐसी महान आत्मा को हम ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। श्रद्धांजलि सभा में आबूरोड नगरपालिका अध्यक्ष मगनदान चारण, एयर फोर्स के स्क्वाड्रन लीडर जयकृष्ण, सीआरपीएफ सहायक कमाण्डेंट विजय चौधरी, ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, आबूरोड उपखण्ड अधिकारी अरविन्द शर्मा, तहसीलदार दिनेश, जयपुर सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. सुषमा दीदी, राजापार्क सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. पूनम दीदी आदि ने अपने विचार रखते हुए शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सेवाकेन्द्र के तीसरे वार्षिकोत्सव पर विधायक बोरगोहेन ने कहा...

शांतिपूर्ण समाज की स्थापना ही ब्रह्माकुमारीज़ का उद्देश्य

देमोव-असम। बरुआ चांगमई गांव में ब्रह्माकुमारीज़ के वर्ल्ड पीस रिट्रीट सेंटर के तीसरे वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में थोरा निर्वाचन क्षेत्र के विधायक सुशांत बोरगोहेन मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ब्र.कु. रजनी दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका,तिनसुकिया,ऊपरी असम,नागालैण्ड,मिजोरम,अरुणाचल प्रदेश ने 'पॉज़िटिविटी फॉर स्ट्रेस फ्री लिविंग' विषय पर सम्बोधित करने के साथ ही सभी को सामूहिक राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। सुबित कुमार

छेत्री,जर्नलिस्ट,मोरन व अजय गोगोई,प्रेसीडेंट,देमोव प्रेस क्लब ने भी अपने बहुमूल्य वक्तव्य रखे। मीडिया कर्मियों से बात करते हुए विधायक सुशांत बोरगोहेन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के अनेकों सेवाकेन्द्र भारत सहित पूरे विश्व में स्थापित हैं। इनका मुख्य उद्देश्य मानव मन को शांति से सम्पन्न बनाना और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करना है। ब्र.कु. रजनी दीदी ने कहा कि वार्षिकोत्सव के तीन दिवस पूर्व से ही विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। उन्होंने कहा कि यदि कोई अपने जीवन में खुश रहना चाहता है तो उसे उचित तरीके से राजयोग ध्यान साधना का अभ्यास करना चाहिए। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. रुचिका ने किया व ब्र.कु. बिनोद,सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ तिनसुकिया सेवाकेन्द्र ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का संक्षिप्त परिचय दिया।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'मीडिया : मूल्य और विकास' विषय पर परिसंवाद

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई जी के छठवें पुण्य स्मृति दिवस पर हुआ संवाद का आयोजन

इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा इंदौर ज़ोन के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक एवं मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी के छठवें पुण्य स्मृति दिवस पर ज्ञान शिखर ओमशांति भवन में 'मीडिया : मूल्य और विकास' विषय पर परिसंवाद का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिवंगत प्रो. कमल दीक्षित, वरिष्ठ पत्रकार जयकृष्ण गौड, युगप्रभात के संपादक जीवन साहू तथा प्रमुख सेनाध्यक्ष जनरल बिपिन रावत, मधुलिका रावत सहित सेना के 12 अधिकारियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर किया गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कहा कि मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ओमप्रकाश भाई जी और कमल दीक्षित भाई जी ने जो मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता का सपना देखा था उसे पूरा करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ है। भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज बनाकर पुनः नये विश्व की स्थापना कर सकते हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्व विद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. के.जी. सुरेश ने कहा कि समाचार पत्र में नकारात्मक खबरों के साथ समाज में होने वाली सकारात्मक बातों पर भी हमारी सदा नज़र रहे। देवी अहिल्या विश्व विद्यालय इंदौर जनसंचार अध्ययनशाला की विभागाध्यक्षा सोनाली सिंह नरगुन्दे, इंदौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अरविंद तिवारी, न्यूयॉर्क से विशेष ऑनलाइन ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मोहिनी दीदी तथा भोपाल से मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति की सचिव ब्र.कु. डॉ. रीना बहन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम संचालन नवभारत के समूह संपादक क्रांति चतुर्वेदी ने किया तथा वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका तथा मीडिया प्रभाग कोर समिति सदस्य ब्र.कु. अनिता बहन ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के रजिस्ट्रार अविनाश बाजपेई, प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष सतीश जोशी, इंदौर समाचार के प्रधान संपादक विवेक सेठ, पूर्व कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, डॉ. सोमनाथ बडनेरे सहित भोपाल, उज्जैन, रतलाम, राजगढ़ आदि मालवांचल के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, मीडिया,आकाशवाणी, दूरदर्शन से जुड़े संपादक, पत्रकार, मीडिया प्रोफेसर्स तथा पत्रकारिता के छात्रों ने भाग लिया।

“बिना बाड़ खेत” की तरह है आज मनुष्य का जीवन

मनुष्य स्वर्ग-नर्क के ख्याल में खोया रहता है। धर्म ज्ञान के लिए देवस्थान की सीढ़ी घिसता रहता है, लेकिन जब तक आत्म ज्ञान न हो जाए तब तक सब व्यर्थ! कबीर ने इसलिए कहा है “आत्म ज्ञान बिन सब सूना, क्या मथुरा क्या काशी।”

आज मनुष्य क्यों परेशान हो रहा है? क्यों दुःख का रोना रो रहा है? क्यों तनाव में जी रहा है? ऐसे सवाल मन में उठते ज़रूर हैं लेकिन इन सवालों के उत्तर खोजने से पहले हम मनुष्य क्या कर रहे हैं ये समझते हैं...

एक किसान भगवान की प्रतिमा समक्ष रोते हुए कहता है कि “हे देव, मैं तो बर्बाद हो गया, मेरी खड़ी फसल रोझ(नीलगाय) चर गये। वो ये सोचता रहा, आज बाड़ लगाता हूँ, कल बाड़ लगाता हूँ ऐसी दुविधा में मैंने खेत को भगवान भरोसे बिना बाड़ बनाये छोड़ दिया...।”

“आपको अन्य खेत हैं?” देव ने प्रश्न किया।

“हाँ” किसान ने कहा, “उस खेत को बाड़ बनाई है?”

“ना प्रभु”।

“तो रोना बंद करो और उस खेत को रातों-रात सुरक्षित रखने के लिए काम करो। उसमें न तो छिद्र रखना और गेट बंद करना भी न भूलना।”

ब्र.कु. गंगाधर

किसान को अपनी भूल समझ में आ गई। और रातों-रात मजदूरों को लेकर बाड़ बना दिया और खेत बच गया।

इसी तरह आज के मनुष्य का जीवन बिना बाड़ के खेत की तरह है। परिणाम स्वरूप अनेक वासनाओं के रोझ(नीलगाय) को उसकी ज़िंदगी की मूल्यवान वस्तुओं को ‘चर’ जाने का मौका मिलता है। जो कोई बाड़ बनाता है उसकी बाड़ आत्मबल के अभाव में इतनी तर्कवादी होती है कि उसमें तरह-तरह के छिद्र होते हैं। हमारा जीवन स्वयं में सुरक्षित नहीं है। मनुष्य स्वयं उसे असुरक्षित बनाता है। जिस तरह से सीता जी को सुरक्षित रखने के लिए लक्ष्मण ने ‘लक्ष्मण रेखा’ अंकित कर दी थी, मनुष्य को भी ऐसी लक्ष्मण रेखा जीवन में बनाने की ज़रूरत है। वो लक्ष्मण रेखा है संयम, आत्मनियंत्रण। आज मनुष्य न ही खान-पान में संयम रखता है और न ही भोग विलास में। न ही मनोरंजन में संयम बरतता है और न ही व्यवहार शुद्धि में।

वो सब बातों में अपने को बेलगाम बहकने की छूट देता है। वासना और कामनाओं के अश्वों को बेलगाम गति से दौड़ने की छूट देता है। विश्वासघात को शस्त्र के रूप में उपयोग करता है। उसकी जीभ को असत्य बोलने पर लगाम नहीं है। वो आराम से झूठ बोल सकता है, गाली-गलोच कर सकता है, बकवास कर सकता है, आकांक्षाओं में डूबा रहता है। धर्म के बदले धन उसकी परिचालक शक्ति बन गई है।

वह मन हृदय को सुंदर नहीं बनाता है, लेकिन देह को सुंदर दिखाने के लालच में रचा-पचा रहता है। मनुष्य का चार दिन का जीवन “चार बातों में” बीत जाता है। “दो आरज़ू और दो इंतज़ार” में खत्म हो जाता है।

अपने जीवन को लाड़ प्यार करने में मशगूल मानव हर प्रकार के शिष्ट-अनुशासन को छिन्न-भिन्न कर देता है। अमर्यादित स्वतंत्रता, स्वतंत्रता के वे उपासक बन अपने जीवन पर सर्व नियंत्रण की उपेक्षा करता है। आज का मनुष्य स्वतंत्र तो है लेकिन ‘स्वाधीन’ है क्या?

स्वाधीनता मानवता की ओर ले जाती है जबकि अमर्यादित-स्वतंत्रता की भूख उसे भयानक स्वार्थ वृत्ति और दुराचार की ओर ले जाती है।

इसलिए हमें अपने जीवन में अनुशासन युक्त, मर्यादापुरुषोत्तम युक्त बन जीना है। यही परमात्मा का कहना है। वे कहते हैं तुम्हें अपना जीवन बिना बाड़ के खेत की तरह नहीं बनाना है। अपने जीवन को निस्तेज बना रहे हैं तो ऐसे दरवाजे बंद कर दो।

परमात्मा हमें ज्ञान देते हैं। मुख्य रूप से उनकी छः शिक्षाओं को अमल में लाना है। नये साल 2022 में कुछ ऐसे नये श्रेष्ठ संकल्पों करें -

1. आत्म नियंत्रण और आत्म दर्शन
2. सदाचार और सत्यआचरण के आग्रह पर केन्द्रित रहना।
3. धन संचय की वृत्ति से उपराम और भोग विलास पर नियंत्रण रखें।
4. सर्व के प्रति शुभ भावना - करुणा का भाव हो।
5. अपने कर्म का आकंलन, मूल्यांकन और आन्तरिक शुद्धि, मन शुद्धि, अहिंसा का परिपालन करना।
6. मन को मंदिर बनाकर शुद्ध वायुमण्डल बनाना।

बीती को बीती कर सदा खुशी में रहना है

✍ राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हरेक के मस्तक में भाग्य का सितारा चमक रहा है क्योंकि कोई महात्मा या ज्योतिषी, कोई धर्मात्मा ने हमारा भाग्य नहीं बनाया है, स्वयं भगवान ने हमारा भाग्य बनाया है। उसने हमें अपना बना लिया है, जिसको भगवान अपना बनाये या भगवान के हम बन जायें, उनकी नज़र हमारे ऊपर पड़ जाये, यह कभी कोई ने सोचा था क्या! भगवान को हम ही पसन्द आयेंगे, यह तो पता ही नहीं था लेकिन अभी पता पड़ा कि भगवान ने हमको पसन्द किया है। भगवान के मुख से निकला है कि यह मेरी विशेष आत्मायें हैं। आपने भगवान को पहचान लिया, यह सबसे बड़ी विशेषता है। सिर्फ पहचाना ही नहीं लेकिन अधिकार से कहते हो कि 'मेरा बाबा' । हरेक को यह निश्चय है कि मेरे लिए ही बाबा आया है। तो बाबा कहते हैं यह विशेषता न साइंस वालों में है, न कोई वीआईपीज़ में है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ, यह प्रभु की पढ़ाई हम भगवान की यूनिवर्सिटी में भगवान से पढ़ रहे हैं। तो यह रूहानी नशा होना चाहिए, खुश रहना चाहिए। अभी खुशी गायब नहीं होनी चाहिए क्योंकि खुशी से मुस्कुराता हुआ चेहरा सबको अच्छा लगता है।

पहले की सब बातों को भूल करके किसी को भी मिलना है तो मुस्कुरा करके ही मिलना है। दूसरा, मीठे बोल का शरबत बनाके पिलाना है। तीसरा, दिलखुश होके मिलो तो दिलखुश मिठाई खिलाना हो जायेगा क्योंकि बाबा को मुस्कुराता हुआ, खुशी का चेहरा अच्छा लगता है। तो हम सभी बच्चों को बाबा ने दिलतख्त पर बिठा करके कितना दिलखुश किया है, खुशी की खुराक खिलाई है। तो हमारी अविनाशी खुशी की यह गिफ्ट कोई लेके न जाये, यह ध्यान रखो। बीती सो बीती करके बिन्दी लगाते जाओ तो खुशी में रहेंगे। ब्राह्मण जीवन की लाइफ और खुशी नहीं तो क्या कहेंगे? इसलिए हमारी खुशी न जाये, इसके लिए पहले अपने संकल्प को चेक करो फिर सोचो कि ऐसे करना है, ऐसे नहीं करना है। मतलब किसी बात के लिए भी क्यों... कहा माना वेस्ट थॉट का गेट खोल दिया इसलिए कुछ भी करते हो तो पहले सोचो, फिर करो। कितनी भी जल्दी हो या कितने भी बिजी हो पर मुरली सुनके या पढ़ के उससे शुभ संकल्पों का स्टॉक जमा करो तो अपने को कन्ट्रोल कर सकेंगे।

फिर भी कलयुग के प्रभाव के कारण वेस्ट थॉट का प्रभाव तो अपना काम करेगा ज़रूर लेकिन फिर भी मुरली की कोई भी एक प्वाइंट अगर बुद्धि में आ जायेगी उसके ऊपर सोचेंगे, एक होता है सिर्फ रिपीट करना , दूसरा होता है उसके स्वरूप में टिक करके उसको प्रैक्टिकल में लाना, तो वो खाली जगह भर जायेगी फिर व्यर्थ खत्म हो जायेगा। तो कईयों के बुरे संकल्प तो खत्म होते पर व्यर्थ संकल्प चलते रहते हैं इसीलिए बाबा ने अभी होमवर्क दिया है कि व्यर्थ संकल्पों को खत्म करो। यहाँ मधुबन के वातावरण में आ करके, टाइम पास न करके पुरुषार्थ में अपना समय सफल करना है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ काम आयेगा। सोचेंगे, देखेंगे, करेंगे... यह गीत नहीं गाना। जितना भी चांस मिला है उसका पूरा लाभ लेना है।

ऐसा कोई कर्म न हो जो अन्दर ही अन्दर दिल खाये

✍ राजयोगिनी दादी जानकी जी

हम सबके दिल से क्या निकलता है? मेरा बाबा, शुक्रिया बाबा। बाबा हमको कितना प्यार करता है, तो हम शुक्रिया किन शब्दों में बोलें। हर पल, हर सेकण्ड, हर घड़ी बाबा अपनी याद दिलाता है। देखो, तुम कौन हो, किसके हो, क्या कर रहे हो, क्या करने का है? बाबा ने इतनी सारी रोशनी दी है। आँख खुल गई है। तो अपने को देखो, बाबा को देखो और समय को देखो। इतनी समझ आने के बाद जो कुछ किया है, जो कुछ हो गया है, उसको याद नहीं करो, पास्ट इज़ पास्ट। बाबा ने यह बहुत सहज विधि बताई है। नहीं तो जो कुछ हो जाता है वो भूलता नहीं है। कोई गलत काम जिन्हों के साथ होता है, वह भी भूल नहीं सकते हैं। तो जब तक खुद को माफ नहीं किया है या औरों को माफ नहीं किया है तब तक भूल नहीं सकता है। बाबा को सामने रखते खुद के लिए माफी मांग लो। उसके बाद ऐसा कोई काम नहीं करो जो फिर से भूलने की प्रैक्टिस करनी पड़े।

अभी बाबा ने ऐसी समझ दी है कि तुमने किसी के साथ कुछ गलत किया है तो उससे माफी ले लो। अगर किसी ने तेरे से किया है तो उसे माफ कर दो, भूल जाओ। जब तक मन में कुछ खाता है तो बाबा को याद करने से शान्ति नहीं मिल सकती। वह शान्ति से बाबा को याद भी नहीं कर सकता, भले कितना भी योग लगाता रहे, इसलिए भगवान कहता है बीती को भूल जा, वो भुलवाता है और हम याद करें, यह समझदारी नहीं है। जो पहले करते थे वो अब नहीं करना है। विकारी बन्धन के वशीभूत होकर कुछ भी नहीं करना है, नहीं तो विकारी कर्मबन्धन हो जायेगा। छोटा-सा भी विकार, थोड़े से लोभ, मोह वश कोई भी कर्म किया तो हिसाब-किताब बन जाता है। पहले वाले चुक्तू ही नहीं किये, अभी फिर यह नये बना दिये तो भारी हो जायेंगे। ऐसा कोई कर्म न हो जो घड़ी-घड़ी अन्दर ख्याल आये। क्या करें, ऐसे कह के कर लेते हैं। अभी व्यर्थ की एकदम समाप्ति हो जाये। इसके लिए बाबा कहते जो मैं कहता हूँ वही करो, वही सोचो। फिर उसकी कमाल होगी। कभी चलायमान, डोलायमान नहीं होना क्योंकि बाबा की जो शिक्षायें हैं वो न सिर्फ हमने कानों द्वारा सुनी हैं, बुद्धि द्वारा समझी हैं, पर दिल को ऐसी लग गई हैं, जो हमारे संकल्पों में चली गई है।

अभी अन्दर अपने आप फील हो कि अगर आज शरीर छूटे तो मेरी गति क्या होगी? इसमें व्यक्तिगत हरेक अपने को देखें। संकल्प द्वारा यह भी पता चलता है कि 100 प्रतिशत प्योरिटी है या नहीं। संकल्पों में शुद्धि और श्रेष्ठता हो तो दृष्टि भी ऐसी होगी। किसके लिए न द्वेष, न ईर्ष्या..., अच्छी भावना वाला संकल्प हो क्योंकि हमें सदगति दाता मिला है तो हमारे भाग्य औरों का भी भला हो रहा है। कोई बुरा है तो और ही रहमदिल बनके सहयोग दो।

बाप की श्रीमत का पालन करना मेरा स्वधर्म

✍ राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम सच्चे बाबा के बच्चे हैं, सच के अन्दर कभी आंच नहीं लाओ तो स्थिति बन जोयगी।

आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों-क्यों में अपना माथा गर्म नहीं करो। दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता। शीतल काया वाले योगी बन जाते।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी। यूनिटी भी गंवायेंगे। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो - देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता - देखना इसकी क्या गति होगी। मैं क्यों बुरा सोचूं! अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे।

कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता उसे क्यों मिला।

हमें बाबा ने श्रीमत दी है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती! अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, यूनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला-लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है। मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण ज़रूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो।

ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है। भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं।

बे-वश मन ले जा रहा विनाश की ओर

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मन को वश कैसे किया जाये?

अंग्रेजी भाषा में एक प्रसिद्ध उक्ति है - 'माइंड इज़ ए गुड सर्वेन्ट बट ए बैड मास्टर।' इसका भावार्थ यह है कि यदि मन मनुष्य के वश में हो तो मन से एक आज्ञाकारी और योग्य सेवक के रूप में सेवा ली जा सकती है और यदि मनुष्य मन का दास बन जाये तो मन बड़ा दुःख देता है। बात है भी ठीक क्योंकि यदि कोई घोड़ा लगामें तोड़कर, प्यार-पुचकार और चाबुकदस्ती को न मान कर टांगें उछाले जाता है तो वह सवारियों का वाहन नहीं बल्कि जानलेवा हो जाता है। वह सेवक नहीं घातक सिद्ध होता है।

आपने कई बार सुना होगा कि अमुक लड़ाई में हाथी मदमस्त होकर जो भागे तो न केवल महावत को ही चित कर दिया बल्कि उसके पक्ष की सेना के अन्य सैनिकों को भी लताड़ दिया। अतएव, आवश्यकता इस बात की है कि यह मीनाकश हाथी अर्थात् मन अपने महावत अर्थात् बुद्धि के अंकुश यानी वश में रहे। अन्यथा यही मन मनुष्य के विनाश का कारण बन जाता है। जेल भोगवाता है और दुःखी करता है।

शायद आपको मालूम हो कि हाथी को किन-किन युक्तियों से वश किया जाता है। स्पष्ट है कि हाथी एक बड़ा बलवान पशु है। जंगली हाथी को एक पालतू गाय या भैंस के समान तो नहीं पकड़ा जा सकता। अतः युक्ति अथवा बुद्धि-बल से हाथी को वश किया जाता है। जंगल में एक बहुत बड़ा गड्ढा खोद दिया जाता है। उसे खाली रहने दिया जाता है या थोड़ी-सी घास-फूस भर दी जाती है। ऊपर से उसे किसी कमज़ोर लकड़ी इत्यादि से ढ़क दिया जाता है। लकड़ी के तख्ते अथवा फ़र्श पर एक कागज़ की हथनी खड़ी कर दी जाती है। जो हथनी वास्तविक और सजीव मालूम पड़ती है। बस, हाथी जब दूर से ही उसे देखता है तो काम के वश हुए मन के अधीन होकर जो वह मदमस्त की भांति भागता है तो गड्ढे में गिर पड़ता है और जंजीरों में बांध लिया जाता है। यूं तो हाथी एक बुद्धिमान पशु समझा जाता है और अंग्रेजी भाषा में किसी बुद्धिमान व्यक्ति की सराहना करते समय उसकी तुलना हाथी से की जाती है कि यह हाथी के समान बुद्धिमान है। परन्तु जब बलवान एवं बुद्धिमान हाथी का मन वश नहीं रहता तो जंगल में स्वतंत्र विचरने वाला, बेचारा, पराधीन होकर किसी चिड़िया घर में बंद होकर रहता है। इसी प्रकार यदि आप परतंत्रता, अशांति, दुःख इत्यादि के कारणों पर विचार करेंगे तो सदा इसी परिणाम पर पहुँचेंगे कि मन वश न होने के कारण मनुष्य अकर्त्तव्य कर बैठता है और अकर्त्तव्य से ही अनिष्ट अर्थात् दुःख की प्राप्ति होती है।

मन बेवश होने का कारण है - अज्ञान

मन के बे-वश होने से दुःख होता है, यहाँ तक तो बात स्पष्ट है, परंतु अब प्रश्न है कि मन के बे-वश होने का कारण क्या है? विचार करने पर मालूम होगा कि इसका एक कारण तो बुद्धि में ज्ञान का न होना है, बाल-स्वभाव का होना है। जैसे एक बच्चा किशोर अवस्था में बुद्धिबल कम होने के कारण, संकल्प उठते ही आग की लपट को पकड़ने दौड़ता है अथवा मूल्यवान वस्तुओं को भी उलट-पलट कर तोड़-फोड़ डालता है, वैसी ही अवस्था एक ऐसे युवक अथवा वृद्ध पुरुष की होती है जिसका मन बे-लगाम होता है। अंतर केवल इतना होता है कि बच्चे में लाभ-हानि, शुभ-अशुभ, सत-असत में निर्णय करने की बुद्धि न होने के बराबर होती है किन्तु अधिक आयु वालों में यद्यपि यह योग्यता थोड़ी-बहुत होती ही है तो भी उनका मन अपनी ही चलाता है। उनकी बुद्धि में ज्ञान-बल नहीं कि वह अपने मन को और उसके द्वारा तन, धन तथा वचन को ठीक रास्ते पर लगा सकें। बहुत से मनुष्यों को अच्छे और बुरे में पहचान ही नहीं। इस कारण उनका मन निर्बल, बुद्धि के बे-वश होकर जो चाहे करता है। परंतु आज यदि किसी को कहा जाये कि भाई ज्ञान लो ताकि तुम सत्य-असत्य में निर्णय कर सको और ज्ञान-बल से मन को सन्मार्ग पर चला कर सुखी हो सको तो वह सन्मति देने वाले को 'पुरान-पंथी' कहकर, सुनी को अनसुनी कर देता है, मानो वह अपने को ज्ञानस्वरूप समझता है और अपने जीवन से संतुष्ट है। परंतु वास्तव में उस बेचारे को यह भी मालूम नहीं कि मन वश होने से क्या अलौकिक सुख मिलता है।

बुद्धि दिव्य हो तब मन वश हो

यह बात तो समझ में आ गई होगी कि दुःख मन वश न होने के कारण से है और मन का बेवश होना बुद्धि की निर्बलता अथवा अज्ञान के कारण से है। परंतु विचार करने से मालूम होगा कि बुद्धि का निर्बल होना और दुर्बल होना दोनों ही दुःख के कारण हैं। घोड़े को वश में अथवा लगामों में न रख सकने वाला रथवान तो दुःख पाता ही है परंतु घोड़े की लगामें कस कर उसे कुमार्ग पर लगाने वाला भी दुःख अथवा उस के भय से बाहर नहीं होता। कहने का भाव यह है कि अज्ञान के अतिरिक्त मिथ्या ज्ञान भी मन को वाममार्ग पर लगा कर दुःखी करता है। सत्य ज्ञान ही बुद्धि को दिव्य बनाता है और दिव्य बुद्धि के वशीभूत हुआ मन ही मनुष्य का कल्याण करता है।

अतएव, मन को, मिथ्याज्ञान वालों की भाषा में, 'वश' करने से ही समस्या नहीं सुलझ जाती बल्कि आवश्यक है कि बुद्धि भी अहंकार रूपी मद के नशे में चूर न हो, क्रोध रूपी पट्टी के कारण अन्धी न हो, मोह के दलदल में धकेलने वाली न हो, काम रूपी विषय-वैतरणी में डुबोने की प्रतिज्ञा न की हो।

आप जानते हैं कि एक नदी का बांध बांधकर उसे ऐसे मार्ग से भी ले जाया जा सकता है कि सूखी भूमि पर हरे-भरे खेत उग आयें और किसी पड़ोसी देश से शत्रुता करने वाले देश के शासक दुर्बुद्धि होने के कारण बसते ग्रामों को भी जलमय कर, पातक बन सकते हैं। ऐसे ही मन अथवा संकल्प शक्ति के प्रवाह को यदि रचनात्मक कार्यों में लगाया जाये तो युगपरिवर्तन हो सकता है और यदि उससे अनिष्ट किया जाये तो राष्ट्र का पतन भी सम्भव है। पुराने इतिहास की बात क्यों करें, आज भी विदेशों के जिन राजनीतिज्ञों तथा वैज्ञानिकों की बुद्धि, उनकी मानसिक शक्ति हाइड्रोजन बम बनाने में लग रही है, उनकी बुद्धि के विषय में आप इसके सिवा क्या कहेंगे कि विपरीत होने के कारण वे अपने मन को विनाश की ओर ले जा रहे हैं।

बिजनी-असम। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित 'सुखधाम' भवन का उद्घाटन राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी,डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज़,एनईआर एवं बांग्लादेश के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में उपस्थित रहे कमल सिंह नरज़ारी,पूर्व विधायक,बिजनी, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका एवं अंतर्राष्ट्रीय वक्ता,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. रुक्मिणी दीदी,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,मा.आबू, ब्र.कु. सुभद्रा बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. जोनाली बहन, ब्र.कु. आशा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

सादाबाद-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र के सत्संग हॉल व ध्यान कक्ष के नवीनीकरण के मंगलमय उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आगरा क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, पूर्व सांसद की धर्मपत्नी श्वेता दिवाकर, हाथरस जनपद प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, आगरा सह प्रभारी व भरतपुर जनपद प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी, मुरसान के पूर्व चेयरमैन गिर्राज किशोर शर्मा, स्थानीय वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. भावना बहन तथा बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

हाथरस-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत सरस्वती महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर में विद्यार्थियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल, सरस्वती महाविद्यालय के शिविर संयोजक डॉ. देवप्रकाश, आनंदपुरी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश शर्मा, ब्र.कु. दिनेश, ब्र.कु. गजेन्द्र आदि ने अपने विचार रखे। इस मौके पर सरस्वती महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अतीत श्रीवास्तव, लेफ्टिनेंट डॉ. स्वकेन्द्र सिंह, रामवीर सिंह, प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या चित्रा स्वामी, शिक्षिका आशा कुमारी, दीप्ति एनएस के विद्यार्थियों सहित प्राथमिक विद्यालय के बच्चे भी उपस्थित रहे।

जम्मू। शाश्वत यौगिक खेती कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. जे.पी. शर्मा,वी.सी.,शेर-ए-कश्मीर युनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी,जम्मू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए जम्मू तवी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुदर्शन बहन। साथ हैं ब्र.कु. रविंदर भाई, ब्र.कु. अंजू बहन, ब्र.कु. रमा बहन, डॉ. जगपाल शर्मा,पूर्व डायरेक्टर,रिसर्च तथा डॉ. नरिंदर सिंह रैना,प्रोफेसर,एग्रोफॉरेस्टी।

नरवाना-हरियाणा। विश्व मृदा दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा धरोदी गांव में किसानों के लिए आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं कृषि अधिकारी वजीर सिंह को ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. पूजा तथा ब्र.कु. डॉ. साधु राम शर्मा।

मण्डी बामोरा-बीना(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शासकीय माध्यमिक बालक शाला और कन्या शाला तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक हाईयर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित मोटिवेशनल वर्कशॉप में ब्र.कु. जानकी बहन, ब्र.कु. रिया बहन तथा मोटिवेशनल लेखक पुष्पेन्द्र साहू ने विभिन्न प्रेरणादाई विषयों पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर बालकशाला के प्रधानाध्यापक उदयभान सिंह, शिक्षक दीपक आचार्य, नवीन विश्वकर्मा, शिक्षिका मीना जैन, उज्जवलता आठिया सहित अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 4

ख्यालों को यूं खूबसूरत करें

व्यक्ति जब अपनी सोच बदलता है तो ज़िंदगी बदल जाती है। वास्तव में वर्तमान समय ख्यालों को ही खूबसूरत रखने की आवश्यकता है। क्योंकि चारों ओर हम देखते हैं कि प्रत्येक प्रकार से व्यक्ति मानसिक कमज़ोरी को विकसित करते हुए अनेक प्रकार के नकारात्मक ख्यालातों में वो चलता जा रहा है। इसीलिए जब ख्यालात ही बीज हैं तो सोचिए वो जीवन कैसा होगा! एक कहानी के माध्यम से मैं आपको बताना चाहूँगी।

एक बार एक कुम्हार कुछ माटी लेकर आया और माटी को रोंदने लगा। उसके मन में ये विचार आया कि अभी चिलम बनाता हूँ इस मिट्टी से। आजकल चिलम का बहुत फैशन है। तो इस मिट्टी से मैं चिलम बनाऊंगा। उसने रौंदना चालू किया। इतने में उसकी पत्नी बाहर आकर उससे पूछती है कि इस मिट्टी से क्या बनाओगे? कुम्हार ने कहा कि आजकल चिलम का बहुत फैशन है। हर कोई चिलम पीना चाहता है। इसीलिए इस मिट्टी से मैं चिलम बनाना चाहता हूँ। तो पत्नी ने कहा कि गर्मी के दिन शुरु हो रहे हैं तो सुराही बना दो, काफी बिकेगी, ये वर्तमान समय की पुकार है। अब कुम्हार सोच में पड़ गया कि क्या करूँ, इतने में उसको आया कि हाँ बात तो ठीक कह रही है। अभी गर्मी के दिन आ रहे हैं तो सुराही बना देता हूँ। फिर वो मिट्टी रौंदने लगा और सुराही बनाने लगा तो मिट्टी से आवाज़ आई कि अरे कुम्हार क्या कर रहे हो? तो कुम्हार ने कहा कि अभी सुराही बना रहा हूँ। मिट्टी ने कहा कि तुम तो चिलम बनाने वाले थे, तो बोला हाँ सोचा था कि चिलम बनाऊं लेकिन अभी विचार बदल गया।

मिट्टी ने कहा कि तेरा तो विचार बदल गया लेकिन मेरी तो ज़िंदगी बदल गयी। चिलम बनाता तो खुद भी जलती जब उसमें आग डालते तो, और दूसरों को भी जलाती। लेकिन अब तुम सुराही बना रहे हो तो उसमें शीतल जल पड़ेगा खुद भी ठंडी रहूँगी और दूसरों को भी शीतल बनाऊंगी। तो तेरा तो विचार बदला मेरी तो ज़िंदगी बदल गयी। मेरी किस्मत बदल गयी।

सचमुच एक विचार से व्यक्ति की सारी ज़िंदगी बदल जाती है। विचार ही तो मनुष्य के अन्दर वो बीज का कार्य करता है। और इसीलिए आज के युग में जहाँ चारों ओर नकारात्मक वातावरण बनता जा रहा है। मनुष्य अवसाद का शिकार होता जा रहा है। ऐसे समय में ही ख्यालातों को खूबसूरत करने की आवश्यकता है। क्योंकि ये हम सभी ने

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सचमुच एक विचार से व्यक्ति की सारी ज़िंदगी बदल जाती है।

अनुभव कर लिया, प्रत्यक्ष देख लिया संसार के अन्दर कि जिन्होंने भी नकारात्मक ख्यालों को अपनाया है, उनकी ज़िंदगी कहाँ से कहाँ तक पहुंचती है। इसीलिए सकारात्मक विचारों को, सकारात्मक ख्यालों को पनपने देना चाहिए जीवन के अन्दर। तो ये जीवन की दिशा और दशा दोनों को ही एक अलग मुकाम पर ले जायेंगे। अलग ऊंचाईयों पर ले जायेंगे। सकारात्मक विचार की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि ये विचार ही हमें जीवन जीने का एक उमंग देता है। पुनः अपने जीवन को संवारने का एक अवसर देता है। इसीलिए ख्यालातों को खूबसूरत बनाने की ज़रूरत है। साथ ही साथ अगर देखा जाये तो मनुष्य कहीं न कहीं सोचता है कि आखिर ये मन नकारात्मक क्यों सोचता है, क्यों सकारात्मक विचार नहीं चलते हैं? जीवन में कुछ भी घटता है फौरन नकारात्मक विचार आ जाता है। कुछ भी हुआ यही मन से निकलेगा कि अब क्या होगा! कहीं ऐसा तो नहीं हो जायेगा! कहीं वैसा तो नहीं हो जायेगा! तो पहला विचार मनुष्य के मन के अन्दर नकारात्मक क्यों आता है, सकारात्मक क्यों नहीं आता है? इसका कारण कहीं न कहीं हमने मन को फीडिंग दिया है। अपने मन को जो भोजन दिया है, मन को जिन बातों से संवारा है, कहीं वही तो नकारात्मक नहीं हैं? क्योंकि जो अन्दर डाला जाता है वही तो प्रत्यक्ष रूप में बाहर आता है। अगर अच्छी चीज़ अन्दर डाली गयी तो अच्छी चीज़ ही विचारों के माध्यम से बाहर निकलेगी!

लेकिन अगर सुबह से लेकर रात तक बुराई को ही डालते जायेंगे, बुरे समाचार, बुरी बातें, तो बाहर भी तो वही निकलेगा अपने विचारों से। इसीलिए नकारात्मक विचार सबसे पहले जीवन के अन्दर आते हैं। क्योंकि सुबह उठो तो सबसे पहले हम अपना मोबाइल उठाते हैं, व्हाट्सएप्प चेक करते हैं उसमें अच्छे-अच्छे सुविचार भी आते हैं। परन्तु हम उसको पढ़ते हुए यही सोचते हैं कि ये फलाने को भेज देता हूँ अच्छा रहेगा। आगे उसको फॉरवर्ड कर देते हैं। कभी बैठकर उसपर चिंतन करें, उसपर मनन करें वो नहीं हो पाता है। दूसरों का ख्याल पहले आता है कि ये विचार उसके लिए बहुत अच्छा है। लेकिन मेरे लिए कितना अच्छा है ये हम नहीं सोचते हैं।

उसके बाद न्यूजपेपर उठाते हैं और न्यूज़पेपर में भी कौन-सी इनफार्मेशन मिलेगी? सारा न्यूज़पेपर अधिकतर नकारात्मक बातों से ही भरा होता है। उसके बाद टेलिविज़न चालू किया, और टेलिविजन के अन्दर जो खबरें आती हैं अधिकतर कितने अकस्मात हुए, कितने लोग किस चीज़ के शिकार हुए, कहाँ कितना नुकसान हुआ, सारी नकारात्मक खबरें। अब जो हमने भरा है वही तो हमारे ख्यालातों के रूप में, चिंतन के रूप में बाहर आयेगा।

- क्रमशः

बेलगावी-कर्नाटक। रीजेंटा रिज़ॉर्ट बेलागवी में माननीय मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई व विधायक रमेश जरकीहोली से ज्ञानचर्चा कर किनाये स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के साइलेंस वैली रिट्रीट सेंटर में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सुलोचना, ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. भारती तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

बहादुरगढ़-हरियाणा। अ-सरकारी एवं असर-कारी विश्व गुरू भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित 14वें नेशनल वुमेन एक्सीलेंसी अवॉर्ड 2021 कार्यक्रम में 'नेशनल वुमेन एक्सीलेंसी अवॉर्ड 2021' प्राप्त करने के पश्चात् ब्र.कु. अंजलि दीदी बाबा हरदीप सिंह जी,गोविंद सदन, विक्रमजीत सिंह,गोविंद सदन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. विनीता दीदी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, विजय तिवारी,प्रेसिडेंट,इंडो-यूरोपियन चेंबर ऑफ स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज़ेज़ तथा अन्य।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये,
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on E-Mail -omshanti-media.acct@bkivv.org or
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

आगरा-उ.प्र.। सुखमनी सेवा सभा, महिला शांति सेना, ब्रह्माकुमारीज़ सहित नगर की अन्य संस्थाओं के संयुक्त तत्वाधान में गुरुद्वारा नॉर्थ ईदगाह में आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में सेना प्रमुख बिपिन रावत, मधुलिका रावत तथा अन्य अधिकारियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। इस अवसर पर वीर महेन्द्र पाल सिंह, महंत योगेश पुरी, ब्रह्माकुमारीज़ आगरा पीपल मंडी से ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. दर्शन बहन व अन्य ब्र.कु. बहनें, मुस्लिम धर्मगुरु मौलाना उज्जैर आलम, ईसाई समाज से फादर वर्गीज, पादरी परसी सोलोमन,जॉन पॉल तथा अन्य धर्म गुरू उपस्थित रहे।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। ग्राम विकास हेतु आयोजित सेमिनार में ब्र.कु. मंजू बहन के सम्बोधन के पश्चात् एवं उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ हैं प्रमोद तिवारी,सीनियर एक्ज़ीक्युटिव,मोदीकेयर, प्रदीप राठौर,सीनियर एक्ज़ीक्युटिव,मोदीकेयर, शिवराम कश्यप,जूनियर एक्ज़ीक्युटिव,मोदीकेयर तथा अन्य।

छतरपुर-म.प्र.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् वी.के.एस. चौहान,सी.ओ.,एन.सी.सी. तथा आर.के. गोयत,लेफ्टिनेंट कर्नल,एन.सी.सी. के साथ ब्र.कु. शैलजा बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

सोनकच्छ-देवास(म.प्र.)। सेवाकेन्द्र के तृतीय वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता दीदी,सेवाकेन्द्र संचालिका,देवास, नीता डेरवाल,थाना प्रभारी,सोनकच्छ, अभिषेक चौरसिया,नायब तहसीलदार,भौरासा, ब्र.कु. सोनाली,सेवाकेन्द्र संचालिका,सोनकच्छ तथा अन्य।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 5

क्या जीवन के आखिरी क्षण ही ईश्वर प्राप्ति के सर्वश्रेष्ठ क्षण हैं?

हे लो! रवि, मैं तैयार हूँ, आ जाओ तुम।
ठीक है रोहन, आता हूँ।
और रवि कैसा चल रहा है जीवन, आज कल तुम कुछ बताते नहीं।
जीवन तो एकदम आनंदमय चल रहा है। और तुम्हारा जीवन कैसा चल रहा है रोहन?
मेरे दोस्त मेरा तो जीवन बस ऐसे संघर्ष में ही बीत जाएगा शायद। इतनी समस्या हैं जीवन में कि कुछ पूछो मत।
अरे! क्या हुआ ऐसा?
अरे, क्या-क्या बताऊं मैं तुम्हें, दफ्तर में बॉस ने दुःखी कर रखा है और घर में धर्मपत्नी ने और भी बहुत कुछ है।
तो मैं हूँ ना, तू मुझे बता अपनी समस्या शायद मैं तेरी मदद कर सकूं।
अरे! भाई कब तक तू मेरी समस्या सुनेगा। एक दिन तू भी कहेगा बस कर अपने ये दुःख के पिटारे खोलने।
ओह! अच्छा! भाई फिर तू ना एक काम कर, तू अपने कुछ पल प्रभु के साथ बिताने प्रारम्भ कर, तू उससे बातें कर तो तूझे हल्कापन लगेगा और समस्या का समाधान भी मिलेगा।
दोस्त, तू फिर यही अटक गया रवि। अगर मैं भगवान के साथ समय बिताऊंगा तो ये नौकरी, बीवी, बच्चों की सम्भाल, घर की ज़िम्मेदारियां कौन लेगा? अरे भगवान थोड़े निभाने आ जाएगा।
अरे रोहन ऐसा कुछ नहीं है तू करके तो देख।
रवि, ना तो मेरे पास ये सब करने का टाइम है और न ही मुझे सन्यासी बनना है। तूझे करना है तू कर।
चल कोई नहीं, तू ऐसे नाराज़ मत हो।
अरे मैं नाराज़ नहीं हो रहा, अच्छा ये बता तेरे बेटे का(साहिल) के परीक्षा का परिणाम क्या रहा?
हाँ बहुत अच्छा रहा उसका परीक्षाफल। उसने 93 प्रतिशत प्राप्त किए हैं।
अच्छा। लेकिन रवि इससे होगा क्या, आज के समय में हर क्षेत्र में इतनी प्रतियोगिता है कि इन अंकों से उसका कुछ नहीं होने वाला। मैंने तेरे से पहले भी बोला था तू अपने साथ-साथ उसका जीवन बर्बाद मत कर। अरे बढ़ाना है तो उसे तो पढ़ाई-लिखाई में बढ़ा, खेल-कूद में आगे बढ़ा। रोज़-रोज़ उसको भगवान के घर ले जाने से क्या होगा! अरे अभी तो उसका पूरा जीवन पड़ा है, बाद में कर लेगा भगवान का ध्यान, उनकी आराधना।
रोहन तू एक बात बता, तू अपने बेटे से पढ़ाई छोड़कर पूरे दिन अपनी सेवा करने के लिए कहता है?
नहीं(रोहन बोला)।
अच्छा क्या तेरे मिलने के बाद तेरा बेटा नकारा हो जाता है?
बिल्कुल नहीं।
और एक और बात बता, क्या तेरे साथ रहते हुए तेरा बेटा उन्नति नहीं कर सकता?
बिल्कुल भी नहीं, और तू ऐसे बेतुके प्रश्न क्यों पूछ रहा है? यहाँ कोई सिर-पैर है इन सभी बातों का?
बिल्कुल है। भाई देख जैसे तू एक बाप होने के नाते अपने बेटे को नकारा नहीं बनाना चाहता, ये नहीं चाहता कि वो बस तेरी सेवा पूजा करे अपने काम-धंधे छोड़कर। ठीक उसी प्रकार हमारा

हमारी मान्यताएं ऐसी बनी हुई हैं कि ईश्वर प्राप्ति का समय वृद्ध अवस्था है, किन्तु हमें ये पता नहीं कि हमारी मृत्यु की तारीख कब है! इसी असमझ ने, ईश्वर से होने वाली बहुउपयोगी प्राप्ति से वंचित कर दिया है। अब इस भ्रम को मिटा कर सही समझ से स्वयं को शक्तिशाली बनाना होगा।

प्यारा पिता परमात्मा भी हम सभी का पिता है वो भी अपने बच्चों को नकारा बनाना नहीं चाहता, वो भी नहीं चाहता के बच्चे धंधाधोरी को छोड़कर उसके पास आ जाएं अर्थात् सन्यासी बन जाए। तो रवि ये सब करने से भी क्या होगा, समस्या कम थोड़े होगी क्योंकि बॉस भी वही है और बीवी भी। रोहन देख, जैसे एक बच्चा अपने बाप के साथ होता है तो निश्चित रहता है, बेफिक्र रहता है वैसे अगर हम भी अपने पिता के साथ सदैव रहें माना उसकी याद में रहें तो हम भी हल्के रहेंगे क्योंकि हम फिर उसकी मदद को महसूस करने के पात्र बन जाएंगे। और हाँ परिस्थितियां आयेंगी लेकिन वो तुम्हें शक्ति देगा जिससे तुम उनको सहज पार कर सकोगे। और अभी बिल्कुल सही बोला तू, कि तू भी कब तक मेरे दुःख सुनेगा, एक दिन तू भी मुख मोड़ लेगा। क्योंकि भाई आज सभी के पास अपने खुद के ही दुःख इतने हैं कि वो दूसरे के दुःख सुनना तक नहीं चाहते, वो स्वयं ही इतने उलझे हुए हैं तो वो दूसरे को क्या सुलझाएंगे।

इसलिए भाई बस एक वो खुदा दोस्त ही ऐसा है जो हमें सदैव सुनता भी है, समझता भी है और फिर हमारे दुःख हर्ता भी है। अच्छा! परन्तु हमें अभी इस उम्र में उसको याद करने की क्या ज़रूरत है? अभी तो ज़िंदगी बहुत बाकी है। अच्छा! मेरे एक और प्रश्न का उत्तर दे। तू अपने मृत्यु की तारीख लिखवाकर लाया है कहीं से? कोई लिखित में प्रमाण है तेरे पास कि तू इस सन में इतनी तारीख को ही शरीर छोड़ेगा?
नहीं लाया मैं(रोहन बोला)।
हाँ बिल्कुल सही बोला तूने और तू तो क्या, इस संसार में कोई मनुष्य नहीं लाया। तो जब तूझे ये सुनिश्चित ही नहीं भी ज़रूर पहुंचेगा! और हाँ, क्या किसी वेद शास्त्र में ऐसा लिखा है कि ईश्वर की प्राप्ति जीवन के आखिरी क्षण में ही की जा सकती है।
हाँ ऐसा तो कुछ नहीं लिखा(रोहन बोला)।
मेरे प्यारे भाई तू इस अंधेरे की दुनिया से बाहर आ क्योंकि हमें समय और मौत बताकर नहीं आएगी। और वानप्रस्थ अवस्था तक तुम बिस्तर, लाठी पकड़ने के बाद, शरीर का साथ ना देने पर कैसे ईश्वर को प्राप्त कर पाओगे जब ये सब तुम चलते हाथ-पैर नहीं प्राप्त कर पा रहे तो! और अंत में सिर्फ पश्चाताप ही होगा, ना कि ईश्वर की प्राप्ति!

प्यारे भाई, वो हमारा पिता है, हर उम्र, हर क्षण और हर परिस्थिति में वो हमारे साथ है, था और रहेगा। और वो हमें जीवन जीने की कला सिखाता है, ना कि हमारे जीवन को काला बनाता है। वो हमें कर्मों का सन्यास नहीं सिखाता। वो तो हमें विकारों का सन्यास सिखाता है। हमारे जीवन को संतुलित बनाना सिखाता है। चेक करो! नहीं तो जीवन की अनमोल घड़ियां यूं ही बीत न जाएं कहीं!

हाँ रवि, मैं आज तेरी सभी बातों से सहमत भी हूँ और मुझे अब तूने सही राह भी दिखा दी। मेरा जो भ्रम था वो आज तूने दूर किया है और बताया कि वृद्ध अवस्था ही सर्व श्रेष्ठ समय नहीं है ईश्वर को प्राप्त करने का। हम उसको जितना शीघ्र प्राप्त करें, जितनी ज़्यादा अपनी श्वास सफल करें उतना हमारे लिए अच्छा है।

प्यारे भाईयों-बहनों, आप राजयोग के द्वारा गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल पुष्प समान बन सकते हैं। ईश्वर हमें सन्यासी नहीं कर्मयोगी बनाते हैं। क्योंकि इस तन में रहते कर्मों का सन्यास लेना ये संभव नहीं है। शरीर निर्वाह अर्थ तो कर्म हमें करने ही होंगे। इसलिए मीठे भाई-बहनों आप अपने नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर जाकर राजयोग के अभ्यास द्वारा ईश्वर का परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

ब्र.कु. उर्वशी,दिल्ली

आस्का-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति शक्ति भवन द्वारा अशोका सिनेमा हॉल में आयोजित 'खुशियों का सुपर बाज़ार' विषयक त्रिदिवीय 'स्वास्थ्य शिविर' में मंजुला स्वेन,विधायक,आस्का, प्रो. प्रशांत कुमार पण्डा,रिटा. प्रिन्सीपल,साइंस कॉलेज,आस्का, चन्द्र शेखर पात्र,प्रेसीडेंट,बार काउंसिल,आस्का, ब्र.कु. पुरुषोत्तम चौधरी,मोटिवेशनल स्पीकर,एच.आर. ट्रेनर एंड मेमोरी एक्सपर्ट, जूनियर साइंटिस्ट ऑफ डीआरडीओ,भारत सरकार, ब्र.कु. प्रिया चौधरी,चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट,राजयोगा टीचर,भंडारा,नागपुर, देबराज मोहन्ती,पूर्व विधायक एवं प्रेसीडेंट,प्रेस क्लब,आस्का, सत्य नारायण रथ,प्रसन्ना टेटे एक्ज़ीक्युटिव ऑफिसर,एनएसी,आस्का आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस दौरान विभिन्न कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए सेमिनार व जेल में कैदी भाई-भाई बहनों के लिए भी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

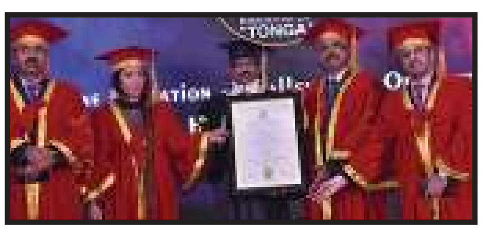

गुरूग्राम-हरियाणा। रेडिसन होटल,गुरूग्राम में कॉमनवेल्थ वोकेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कॉन्वोकेशन सेरेमनी में डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार एवं आध्यात्मिकता के क्षेत्र में 174 विश्व कीर्तिमान स्थापित करने हेतु 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए डॉ. रिपु रंजन सिन्हा,प्रो. वाइस चांसलर,एशिया, डॉ. मानव आहुजा,वाइस प्रेसीडेंट,बड़ा बिज़नेस, डॉ. प्रियदर्शी नायक,फाउण्डर,सेंटर ऑफ एजुकेशन डेवलपमेंट,नई दिल्ली तथा श्रीमति साजिया शोजाई,डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर,अफगानिस्तान।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इंडियन आर्मी के जैक राइफल्स युनिट में आयोजित 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट' कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विनीता बहन तथा कर्नल ब्र.कु. विकास राव ने सम्बोधित किया एवं अपने अनुभव साझा किए। दो सौ जवानों ने कार्यक्रम का लाभ लिया।

फतेहाबाद-हरियाणा। गीता जयन्ती महोत्सव में अजय चोपड़ा,अतिरिक्त उपायुक्त को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद देते हुए ब्र.कु. मोहिनी बहन।

नई दिल्ली। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को उनके 62वें जन्मदिन की बधाई देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए माउण्ट से राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई एवं राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई। दादियों की ओर से उन्हें आशीर्वाद भी दिया एवं माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। हरियाणा योग आयोग द्वारा आयोजित छः दिवसीय कार्यक्रम में स्वामी ज्ञानानंद जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज दीदी।

नरवाना-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा उझाना गांव में विश्व मृदा दिवस पर किसानों के लिए आयोजित जागृति शिविर में मिट्टी जाँच अधिकारी वजीर सिंह, गांव के प्रयास समिति के प्रधान सुरेश, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, संयोजक डॉ. साधु राम शर्मा, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. पूजा सहित बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों ने भाग लिया।

मोतिहारी-बिहार। हिंदुस्तान हिन्दी दैनिक के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट विजय सिंह को परमात्म परिचय देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।

ओल-भरतपुर(राज.)। ओल स्थित केडीसी कॉलेज के अंतर्गत आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में श्रीकांत शर्मा,ऊर्जा मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को ओम शान्ति मीडिया व ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. योगिता बहन।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 6

सर्दियों में गुड़ और काली मिर्च के सेवन से फायदे

गुड़ और काली मिर्च दोनों ही सेहत को काफी फायदे पहुंचाते हैं, इन दोनों को एक साथ में मिलाकर इस्तेमाल किया जाये तो सेहत को इनके दोगुने फायदे मिलते हैं। बता दें कि गुड़ और काली मिर्च दोनों की ही तासीर काफी गर्म होती है। सीमित मात्रा में इसका सेवन सर्दी के मौसम में लगभग हर रोज़ ही किया जा सकता है। सर्दियों के मौसम में गुड़ और काली मिर्च मिलाकर खाने से जहाँ सेहत को कई सारे फायदे एक साथ मिलते हैं। तो वहीं कई दिक्कतों को भी दूर किया जा सकता है। आइए जानते हैं इनके बारे में...

सर्दी-जुकाम-खांसी से राहत दे

सर्दी के मौसम में सर्दी-जुकाम-खांसी होना आम बात है। इस दिक्कत को दूर करने के लिए आप गुड़ और काली मिर्च को एक साथ मिलाकर खा सकते हैं। इसके लिए आप थोड़ा सा गुड़ लेकर इसके साथ चार-पांच दाने काली मिर्च मिलाकर दिन में दो-तीन बार खा लें।

गले के दर्द से आराम दे

गुड़ और काली मिर्च गले में होने वाले दर्द से आराम देने में भी आपकी मदद कर सकते हैं। इसके लिए आप लगभग 80 ग्राम गुड़ लेकर इसको अच्छी तरह से मैश कर लें। फिर इसमें 20 ग्राम काली मिर्च का पाउडर मिला लें। और 10 ग्राम जौ का पाउडर भी मिक्स कर लें। इसके बाद इसमें 20 ग्राम पीपली और 40 ग्राम अनार की छाल को भी पीसकर मिला लें। अब इस मिक्सचर की छोटी-छोटी गोलियां बनाकर गर्म पानी के साथ दिन में दो-तीन बार खाएं।

सिर दर्द और नकसीर की दिक्कत दूर करे

सिर दर्द और नकसीर की दिक्कत को दूर करने के लिए आप गुड़ और काली मिर्च का सेवन कर सकते हैं। इसके लिए आप दही में थोड़ा-सा गुड़ और काली मिर्च पाउडर मिलाकर इसका सेवन करें। इससे नकसीर की वजह से नाक से खून निकलना बंद होगा साथ ही सिर दर्द से भी राहत मिलेगी।

जोड़ों का दर्द दूर करे

जोड़ों का दर्द दूर करने में भी गुड़ और काली मिर्च काफी अच्छी भूमिका निभाते हैं। इसके लिए आप थोड़े से गुड में काली मिर्च पाउडर को मिक्स करके इसका सेवन करें। काली मिर्च में पैपरीन नाम का तत्व पाया जाता है, जो जोड़ों के दर्द में आराम देने का काम करता है।

इस लेख में दी गई जानकारियां और सूचनाएं सामान्य मान्यताओं पर आधारित हैं। इन पर अमल करने से पहले संबंधित विशेष से संम्पर्क करें।

भरतपुर-राज.। भरतपुर के अंतिम शासक महाराजा सवाई बृजेन्द्र सिंह जी की 103 वीं जयंती पर महाराजा विश्वेन्द्र सिंह,कैबिनेट मंत्री राजस्थान सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. बबिता। साथ हैं ब्र.कु. प्रवीणा बहन तथा डॉ. सुभाष गर्ग,तकनीकी शिक्षा एवं आयुर्वेद विभाग राज्यमंत्री राजस्थान सरकार।

पानीपत-हरियाणा। उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री अशोक कटारिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. साधना बहन, ब्र.कु. जगपाल भाई तथा ब्र.कु. भारत भूषण भाई।

माउण्ट आबू-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा अमृत महोत्सव कार कैम्पेन फेज़ 1,रूट 5 के अंतर्गत नॉर्थ ईस्ट गुवाहाटी रीजन्स तेज़पुर-तेंगा-तवांग-चारदुआर-ओरंग आदि क्षेत्रों में एमईएस, सीआईएसएफ, आईटीबीपी, बीआरओ, एसएसबी, गवर्नमेंट इंस्टीट्यूशंस, एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस आदि में तथा अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों सहित 26 कार्यक्रम आयोजित किये गये। कैम्पेन में ब्र.कु. बलराम, ब्र.कु. पुरुषोत्तम, ब्र.कु. प्रिया तथा ब्र.कु. देबाहुती शामिल रहे।

दिल्ली-पीतमपुरा। स्नेह मिलन कार्यक्रम में साशा भाई,सेंट पीटर्सबर्ग,रूस का फूलों का गुलदस्ता भेंट स्वागत करते हुए नर्सिंग ऑफिसर अंजू,आरएमएल हॉस्पिटल,दिल्ली। साथ हैं अनीता डायरेक्टर,लॉरेल उच्च विद्यालय एवं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा दीदी।

फतेहाबाद-हरियाणा। गीता जयंती महोत्सव में उपायुक्त महावीर कौशिक,आईएएस व विधायक देवेन्द्र बबली,टोहाना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य।

ब्यावरा-राजगढ़(म.प्र.)। 'गीता जयंती' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ जिला संचालिका ब्र.कु. मधु, कृषि विस्तार अधिकारी श्याम शाक्यवार, दांगी समाज के जिलाध्यक्ष रामकरण दांगी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी, रिटायर्ड बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना, वरिष्ठ वकील गोपाल शाक्यवार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। जेल के पुलिस अधीक्षक सोमनाथ जी को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ओमकार भाई,मा.आबू। साथ हैं ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. कर्ण भाई।

होशियारपुर-पंजाब। एच.पी.सी.एल.एल.पी.जी. गैस भराई संयत्र होशियारपुर के सीनियर प्लांट मैनेजर नीलेश व्यास की उपस्थिति में ईश्वरीय ज्ञानचर्चा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में बायें से डॉ. अशोक दुबे,रिटा. ड्रग इंस्पेक्टर, किशोर कुमार शाह,असिस्टेंट कमिश्नर,एक्साइज़ एंड प्रोहिबिशन,पटना, संतोष कुमार,आईआरएस,ज्वाइंट कमिश्नर,जीएसटी एंड सेंट्रल एक्साइज़, ब्र.कु. मृदुल बहन,राजयोग शिक्षिका, डॉ. वी.के. सिंह,रिटा. मेडिकल ऑफिसर,एम्स,पटना तथा जय तिवारी,बिज़नेसमैन।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में महंत राम गिरी जी महाराज, स्वामी उमेश गिरी जी महाराज,उत्तराखंड, महंत बच्चा गिरी जी महाराज,हरिद्वार, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा ब्र.कु. नारायण भाई।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 7

अभिभावक... बच्चों के काउंसलर आप स्वयं बनें

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आजकल तो हर बड़े शहरों के स्कूलों में परामर्शदाता यानी काउंसलर नियुक्त किए जाते हैं। बच्चा जाकर उनसे अपनी हर बात करता है जोकि वह अपने मम्मी-पापा से नहीं करता। क्योंकि काउंसलर निष्पक्ष होकर बच्चे की हर बात को आराम से सुनते हैं। 'हाँ जी बताओ क्या हुआ, 'मुझे ये एडिक्शन हो गया, मुझे ये आदत हो गई' मानो बच्चा अपना सबकुछ सुना देता है। काउंसलर बच्चे की किसी भी बात पर रिएक्ट नहीं करते हैं। काउंसलर कहते हैं, कोई बात नहीं, हर चीज़ ठीक हो सकती है। आप बैठो, ठीक करते हैं। मानो वह बहुत ही प्यार से बच्चे को आदर देकर समझाता है और उसकी कमियों को दूर करने का तरीका बता देता है। इससे एक तो आदर बना रहता है और दूसरा कि उसे अपमानित नहीं होना पड़ता।

जबकि माता-पिता का बच्चे से लगाव होता है तो वे प्रतिक्रिया कर देते हैं, कहते हैं - "तुमने ऐसा किया कैसे, तुम्हें इसलिए स्कूल भेजा था, इसलिए मैं इतना खर्च कर रहा हूँ, तुम्हारे लिए मैं इतनी मेहनत इसलिए कर रहा हूँ।' इतना सारा उस बच्चे को सुना देते हैं। फिर तो बच्चा आगे की पूरी बात बताता भी नहीं है।

अब जमाना बदल चुका है, आज हर पैरेंट को अपने बच्चे के लिए काउंसलर बनना पड़ेगा। काउंसलर मतलब साक्षी होकर, शांति से उसकी हर बात सुनें, उनकी बातों को स्वीकार करें जो उन्होंने किया है उसके लिए राय दें। अगर उस समय अपने ऊपर संयम नहीं रखा तो हम खुद ही चिंता में चले जाते हैं, घबरा जाते हैं और फिर उनको अपमानित कर देते हैं। तो यह पक्का मान लें कि अगली बार वो अपनी कोई भी बात आपको बताने वाले नहीं हैं। जबकि होना तो यह चाहिए कि बच्चा अपनी हर बात पैरेंट्स के साथ शेयर करे।

हर बच्चे को अपने माता-पिता से स्वीकार्यता(एक्सेप्टेंस) ही तो चाहिए। अगर वो स्वीकार्यता उसको मम्मी-पापा से मिल गई, तो वो फिर अपने किसी दोस्त के पास जाने की ज़रूरत महसूस नहीं करेगा। अगर मम्मी-पापा से

चाहे बच्चे हों, चाहे कोई और हो, लोग सच बोलने के लिए तैयार हैं। तो हमें भी सच सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए।

वो स्वीकार्यता नहीं मिली तो फिर दूसरों के पास चला जाता है। अगर उसको ये स्वीकार्यता अपने दोस्त से मिल गई तो वह अपने दोस्त के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहता है। यहाँ तक कि वो उन चीज़ों के लिए तैयार रहता है जो उनकी खुद अपनी मर्यादाओं में सही नहीं लगती हैं। उसको हम कहेंगे "फियर प्रेशर"। इसलिए हर घर में स्वीकार्यता मिल जाए तो कोई भी बच्चा कभी भी भय के प्रेशर में नहीं जाएगा।

हमें उन बच्चों को सेफ रखना है। आप अपने बच्चों को कहेंगे कि आप अपनी हर बात मुझे बता सकते हैं। यह गारंटी देना चाहिए कि आप सुनाओगे तो मैं आपको डाटूंगा नहीं।

मैं एक स्कूल में गई थी उसमें नवमीं और दसवीं के 200 बच्चे थे। मैंने पूछा कि आपमें से कौन-कौन हैं जो अपनी हर बात मम्मी-पापा को जाकर सुनाता है। तो सिर्फ पांच बच्चों ने हाथ उठाया। मैंने कहा कि आप मम्मी-पापा को जाकर बोलो कि आप डांटोगे नहीं तो मैं अपनी हर बात आपको बताऊंगा। तो वो मुझ पर हंसने लगे और कहते हैं, दीदी कैसी बात करते हो आप। वो कहते हैं कि पहले हमारे पैरेंट्स हमारी हर बात को सुन लेंगे। उस समय तो वो कुछ नहीं कहेंगे लेकिन बाद में किसी भी बात पर डांटने के लिए हमारी बातों को ही यूज़ करेंगे। हम उनको जानते हैं तो वो भी हमें जानते हैं।

चाहे बच्चे हों, चाहे कोई और हो, लोग सच बोलने के लिए तैयार हैं। तो हमें भी सच सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर हम उनकी हर बात को संयम से सुन लेंगे तो सामने वाला कभी झूठ नहीं बोलेगा। हमारे रिश्ते अपने आप मधुर और मजबूत हो जाएंगे। फिर उन्हें कोई भी बात आपसे छुपाने की आवश्यकता महसूस नहीं होगी।

अगर आपके बच्चे आकर आपसे कुछ शेयर करते हैं तो आप शांति से उनकी हर बात को सुनें। उन्हें किसी भी बात के लिए दोषी न ठहराएं। वो जिस समाज में अभी बड़े हो रहे हैं और हम जिस समाज में बड़े हुए थे, दोनों में बहुत फर्क आ चुका है। तब के नॉर्मल और अब के नार्मल की परिभाषा बदल चुकी है। हमें प्यार से उनको राय देनी है लेकिन पहले उनकी हर बात को मानकर रिश्ते को मजबूत बनाना होगा। तो आप गलत हो यह शब्द समाप्त हो जाएगा और आपसे में जो मिस अंडरस्टैंडिंग शब्द है वो भी खत्म हो जाएगा। हमें अपने रिश्ते में स्वीकार्यता लेकर आना है। तभी हम अपने बच्चे को गलत रास्ते पर जाने से बचा सकते हैं।

यह जीवन है

हमारे अन्दर जब यह सोच घर कर लेती है कि हम सदा के लिए अमर होकर आये हैं, तभी अनेक प्रकार के बोझ, तनाव और उलझन से हम भर जाते हैं लेकिन जब हमारे अन्दर यह धारणा घर करती है कि हर इंसान को यहाँ से एक दिन जाना ही है, और वह भी अनिश्चित होता है, तभी हम निश्चिंत, हल्के या तनाव से मुक्त जीवन जी पाते हैं।

धमतरी-छ.ग.। सेवाकेन्द्र पर सीडीएस जनरल बिपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत सहित अन्य दिवंगत सैनिकों की आत्मा को शांति का दान देने हेतु दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् चित्र में पुलिस विभाग से ए.एस.आई. रामकृष्ण साहू, शक्ति टीम से श्रीमती लक्ष्मी सिक्का तथा कौशल्या महेश्वरी, कामिनी कौशिक, ब्र.कु. सरिता तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

नोएडा-उ.प्र.। हाल ही में लॉन्च किये गये न्यूज़ इंडिया टीवी चैनल के एडिटर इन चीफ सरफराज़ सैफी, क्रियेटिव एडिटर अतुल दयाल व न्यूज़ एंकर्स को न्यूज़ रूम में ईश्वरीय संदेश व सौगात देने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. अदीति,माउण्ट आबू,ज्ञानसरोवर।

राजगढ़-छापीहेड़ा(म.प्र.)। 'गीता स्वाध्याय मंडल' छापीहेड़ा द्वारा श्री सिद्ध बालाजी मंदिर परिसर में गीता जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 'विश्व गीता प्रतिष्ठानाम रामानुजकोट उज्जैनी, अर्चना दुबे, श्री राम मंदिर पंडित बाड़ी सारंगपुर एवं ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. मधु एवं ब्र.कु. सुरेखा को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम से पूर्व राधा कृष्ण मंदिर से शोभायात्रा एवं उपचार केंद्र पहुंचकर गौमाता का पूजन किया गया। सभी अतिथियों को सम्मान पत्र से सम्मानित किया और गीता माता की आरती के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

पटीया-भुवनेश्वर(ओडिशा)। मेजर ध्यानचंद खेल रत्न सम्मान से सम्मानित पैरा-बैडमिंटन प्लेयर प्रमोद भगत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गुलाब बहन।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। तमिलनाडु के कुन्नूर में हेलिकॉप्टर दुर्घटना में शहीद हुए देश के पहले सीडीएस जनरल बिपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत तथा अन्य 12 अधिकारियों एवं जवानों की आत्मा की शांति के लिए आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी, सी.आर.पी.एफ. के दर्शन सिंह, हरेन्द्र सिंह, दीपक शर्मा, शिव कुमार श्रीवास्तव, दिलीप पंचेश्वर, अनिल कुमार, श्याम सिंह चौहान, ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. डॉ. गुरचरण, ब्र.कु. जीतू, ब्र.कु. पवन, ब्र.कु. शिवांश, ब्र.कु. वरुण आदि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिवंगत अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला के जन्मदिवस पर दिव्य नगरी निराला नगर में स्लम एरिया के बच्चों को ठंड के कपड़े और स्टेशनरी का सामान वितरित करने के लिए आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 8

परमात्म ऊर्जा

इंतज़ार में नहीं रहना लेकिन एग्ज़ाम्पल बनना है

दिन-प्रतिदिन कदम आगे समझते हो? ऐसे भी नहीं सोचना कि अभी समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर लेंगे। लेकिन समय के पहले समाप्ति करके और इस स्थिति का अनुभव प्राप्त करना है। अगर समय आने पर इस स्थिति का अनुभव करेंगे तो समय के साथ स्थिति भी बदल जायेगी। समय समाप्त तो फिर अव्यक्त स्थिति का अनुभव भी समाप्त हो दूसरा पार्ट आ जायेगा। इसलिए पहले से ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करना है। कुमारियां दौड़ने में तेज़ होती हैं तो इस ईश्वरीय दौड़ में भी तेज़ जाना है। फर्स्ट आने वाले ही फर्स्ट के नज़दीक आयेंगे। जैसे साकार फर्स्ट गया ना। लक्ष्य तो ऊंचा रखना है। लक्ष्य सम्पूर्ण है तो पुरुषार्थ भी सम्पूर्ण करना है, तब ही सम्पूर्ण पद मिल सकता है। सम्पूर्ण पुरुषार्थ अर्थात् सभी बातों में अपने को सम्पन्न बनाना। बड़ी बात तो है नहीं। जानने के बाद याद करना मुश्किल होता है क्या? जानने को ही नॉलेज कहा जाता है। अगर नॉलेज है और लाइट नहीं है तो वह नॉलेज ही किस काम की, उनको जानना नहीं कहा जायेगा। थ्योरी और चीज़ है। जानना अर्थात् बुद्धि में धारणा करना और चीज़ है। धारणा से कर्म ऑटोमेटिकली हो जाता है। धारणा का अर्थ ही है उस बात को बुद्धि में समाना। नॉलेजफुल बाप के हम बच्चे हैं और ईश्वरीय नॉलेज की लाइट मिघ्त हमारे साथ है। ऐसे समझ कर चलना है। नॉलेज सिर्फ सुनना नहीं लेकिन समाना है।

भोजन खाना और चीज़ है, हज़म करना और चीज़ है। खाने से शक्ति नहीं आएगी। हज़म करने से शक्ति कहाँ से आ जाती है, खाए हुए भोजन को हज़म करने से शक्ति रूप बनता है। शक्तिवान बाप के बच्चे और कुछ कर न सकें, यह हो सकता है? सदैव यही एम रखना चाहिए कि हम ऐसा कर्म करें जो मिसाल बन दिखाएं। इंतज़ार में नहीं रहना है लेकिन एग्ज़ाम्पल बनना है। बाप एग्ज़ाम्पल बना ना!

सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते...

जो लक्ष्य रखा जाता है उसको पूर्ण करने के लिए ऐसे लक्षण भी अपने में भरने हैं। ढीले कोशिश वाले कहाँ तक पहुँचेंगे? कोशिश शब्द ही कहते रहेंगे तो कोशिश में ही रह जायेंगे। एम तो रखना है कि करना ही है। कोशिश अक्षर कहना कमज़ोरी है। कमज़ोरी को मिटाने के लिए कोशिश शब्द को मिटाना है। निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है। निश्चयबुद्धि बनेंगे तो सभी का सहयोग भी मिलेगा। कोई भी कार्य करना होता है तो सदैव यही सोचा जाता है कि मेरे बिना कोई कर नहीं सकता तब ही सफलता होती है। आज से कोशिश अक्षर खत्म करो। मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा। बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से, वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था। अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है। अपने को नए समझेंगे तो कमज़ोरी के संकल्प आयेंगे। पा सकेंगे व नहीं। लेकिन मैं हूँ ही कल्प पहले वाला इस स्मृति से शक्ति आएगी। सदैव अपने को हिम्मतवान बनाना चाहिए। हिम्मत हारना नहीं चाहिए। हिम्मत से मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। बाप को याद करना सहज है व मुश्किल? सहज करने में सहज हो जाता है। यह तो मेरा कर्त्तव्य ही है। क्या करूँ यह संकल्प आने से मुश्किल हो जाता है। कभी भी अपने अन्दर कमज़ोर संकल्प को नहीं रहने देना। अगर मन में कमज़ोर संकल्प उत्पन्न भी हो जायें तो उनको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनना है। अब तक भी अगर कोशिश करते रहेंगे तो अव्यक्त कशिश का अनुभव कब करेंगे? जब तक कोशिश है तब तक अव्यक्त कशिश अपने में आ नहीं सकती। यह भाषा ही कमज़ोरी की है। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय के होंगे। ऐसी स्थिति बनानी है। सदैव चेक करो कि संकल्प रूपी फाउंडेशन मजबूत है। तीव्र पुरुषार्थी की चलन में यह विशेषता होगी जो उनके संकल्प, वाणी, कर्म तीनों ही एक समान होंगे। संकल्प ऊंच हों और कर्म कमज़ोर हों तो उनको तीव्र पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। तीनों की समानता चाहिए। सदैव यह समझना चाहिए कि जो माया कभी-कभी अपना रूप दिखाती है यह सदैव के लिए विदाई लेने आती है। लेकिन विदाई के बदले निमंत्रण दे देते हो। सदैव शिवबाबा के साथ हूँ, उनसे अलग होंगे ही नहीं तो फिर कोई क्या करेंगे। कोई बिज़ी रहता है तो फिर तीसरा डिस्टर्ब नहीं करता। समझते हैं तंग करने वाला कोई नहीं आये तो एक बोर्ड लगा देते हैं। आप भी ऐसा बोर्ड लगाओ तो माया लौट जाएगी।

कथा सरिता

दूसरों पर निर्भर न रहें...

पुराने समय की बात है। एक व्यक्ति बहुत ही आलसी था। वह कोई काम न कर बस इधर-उधर से किसी तरह खाने की व्यवस्था कर लेता था। एक दिन वह जंगल में घूम रहा था। तभी उसने देखा कि एक लोमड़ी लंगड़ाकर चल रही है। उसका एक पैर टूट गया था। लोमड़ी की ये हालत देखकर आलसी व्यक्ति सोच रहा था कि इस जंगल में अभी तक ये लोमड़ी जीवित कैसे है? इसका किसी ने शिकार नहीं किया, इसे खाने के लिए मांस कैसे मिलता होगा? वह व्यक्ति लोमड़ी के पीछे-पीछे चलने लगा, ताकि उसे मालूम हो सके कि इसके खाने की व्यवस्था कैसे होती है? तभी उस व्यक्ति को शेर की दहाड़ सुनाई दी। वह डर गया और तुरंत ही एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर छिप गया। कुछ ही देर में वहां शेर पहुंच गया। उसने मुंह में शिकार पकड़ रखा था। जब शेर लोमड़ी के सामने पहुंचा तो शेर के शिकार में से मांस का एक टुकड़ा गिर गया। शेर वहां से चला गया तो लोमड़ी ने मांस का टुकड़ा खा लिया। आलसी व्यक्ति ये सब देख रहा था। वह सोचने लगा कि भगवान कितना दयालु है। एक लोमड़ी के खाने की व्यवस्था भी भगवान कर रहे हैं। मैं भी पूजा-पाठ करता हूँ तो भगवान मेरे लिए भी खाने की व्यवस्था ज़रूर करेगा। ये सोचकर वह अपने घर आ गया। घर आकर आलसी व्यक्ति बैठ गया और इंतज़ार करने लगा कि भगवान की कृपा से उसे भी खाना मिल जाएगा। बैठे-बैठे तीन दिन गुज़र गए, लेकिन उसके खाने की व्यवस्था नहीं हो सकी। खाना न मिलने की वजह से वह बहुत कमज़ोर हो गया था। तभी उसके घर की ओर एक संत पहुंचे। आलसी व्यक्ति तुरंत ही संत के पास पहुंचा। व्यक्ति ने संत को पूरी बात बता दी। संत ने उससे कहा कि भगवान ने तुम्हें इस घटना के माध्यम से एक बहुत बड़ा संदेश दिया है। तुम एक लोमड़ी की तरह बनना चाहते हो, लेकिन भगवान तुम्हें शेर की तरह बनाना चाहता है। तुम दूसरों पर निर्भर रहना चाहते हो और भगवान तुम्हें दूसरों की मदद करने वाला इंसान बनाना चाहता है। आलसी व्यक्ति को संत की बात समझ आ गई और उसके बाद उसने आलस्य छोड़ दिया और कर्म करने लगा।

सीख :- हमें दूसरों पर निर्भर रहने वाला नहीं, दूसरों की मदद करने वाला इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिए। भगवान भी ऐसे लोगों की मदद करता है, जो दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

भगवान की निःस्वार्थ भक्ति में ही है सुख

एक व्यक्ति बहुत गरीब था। उसके पास कुछ भी नहीं था। वह बहुत दुःखी रहता था। वह एक दिन गांव के विद्वान संत के पास गया और अपनी सारी परेशानियां बता दीं। संत को उस पर दया आ गई और उन्होंने उस व्यक्ति को पारसमणि दे दी। संत ने कहा कि इससे तुम जितना चाहे उतना सोना बना लो। तुम्हारी गरीबी हमेशा के लिए दूर हो जाएगी।

पारस पत्थर से गरीब व्यक्ति ने बहुत सारा सोना बना लिया। अब वो धनवान हो गया। उसके पास सुख-सुविधा की हर चीज़ थी। अपार धन था। फिर भी वह दुःखी रहने लगा। अब उसे अपने धन की चिंता लगी रहती थी। उसे चोरों का डर सताता, राजा का डर लगा रहता। इतना धन होने के बाद भी उसके जीवन में सुख-चैन नहीं था। एक दिन वह फिर से उसी संत के पास पहुंचा। संत ने उससे कहा कि अब तो तुम्हारी गरीबी दूर हो गई है, तुम्हारे पास सब कुछ है। उस व्यक्ति ने कहा कि महाराज मेरे पास धन तो बहुत है, लेकिन मेरे जीवन में शांति नहीं है। आप कोई ऐसा उपाय बता दें, जिससे मेरा मन शांत हो जाए और मेरा सारा डर खत्म हो जाए। संत ने कहा कि ठीक है, वह मणि मुझे वापस दे दो। इसके लिए व्यक्ति ने मना कर दिया, उसने कहा कि महाराज मैं पारस पत्थर नहीं दे सकता, अब मैं फिर से गरीब नहीं बनना चाहता, आप मुझे कोई ऐसा सुख दीजिए जो अमीरी और गरीबी में बराबर मिलता रहे और मृत्यु के समय भी कम न हो। संत ने कहा कि ऐसा सुख तो भगवान की निःस्वार्थ भक्ति में ही मिल सकता है।

जो लोग बिना किसी स्वार्थ के भक्ति करते हैं, वे अमीरी-गरीबी और मृत्यु के समय, हर हाल में सुखी रहते हैं। जहाँ किसी भी तरह का स्वार्थ रहता है वहां दुःख हमेशा रहता है। दुःखों से मुक्ति चाहते हैं तो भगवान का ध्यान करें, लेकिन बिना किसी स्वार्थ के।

रोहतक-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव में ए.डी.सी. महेंदर पाल जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रक्षा दीदी।

नोएडा-उ.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् आनंद धाम आश्रम में सुधांशु जी महाराज व डॉ. अर्चिका दीदी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अदिति,माउण्ट आबू,ज्ञानसरोवर।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 9

पाँच स्वरूपों से पाँच युग सुरक्षित

आध्यात्मिकता में ताकत लाने के लिए हम सभी को परमात्मा ने अलग-अलग अभ्यास बताया है। लेकिन सारे अभ्यास में एक बहुत बड़ा विज्ञान छुपा हुआ है। माना कि ये सारी चीज़ें समझ में देर से आई हैं लेकिन इसका राज़ इतना गहरा है जिससे युगों तक हमारे जीवन में परिवर्तन रह सकता है। जैसे कभी अच्छा बना नहीं जाता है, हम अच्छे ही हैं, क्योंकि जो चीज़ बनाई जाती है वो तो बिगड़ जायेगी। इसीलिए हम अच्छे ही हैं, बस उसको थोड़ा-सा तराशने की आवश्यकता है। और ऐसा तराशा जाए जो हमेशा, हर युग में चमकता रहे।

जब कभी कोर्स हम करते हैं तो उसमें वर्ल्ड साइकल को एक भौगोलिक(ज्योग्रॉफिकल) तरीके से समझाया जाता है कि भारत ऐसा था, फिर ऐसा बना, फिर ऐसा बन गया, समय के परिवर्तन के आधार से। लेकिन भारत नहीं ऐसा बना, भारत में रहने वाले लोगों के विचारों के अंदर ऐसा परिवर्तन आया तो लोग ऐसे बने, तो भारत भी ऐसा बन गया। इसलिए ये समझना अति आवश्यक है कि पाँच स्वरूप का अभ्यास परमात्मा ने हमको बताया लेकिन ये पाँचों स्वरूप हर युग को अपने साथ जोड़ते हैं। हर युग इन पाँचों स्वरूपों से जुड़ा हुआ है।

पहला स्वरूप : हम जब सतयुग में थे, जिसमें कहा जाता है कि हमारी कंचन काया होती है। हम सारे रोग मुक्त होते हैं, निरोगी होते हैं। और ये निरोग्य अवस्था डेढ़ सौ साल तक चलती है। इस अवस्था में हम आये कैसे होंगे, इसको समझते हैं। जैसे कभी आप आईने के सामने जाते हो तो वहाँ पर क्या सोचते हो? यही ना कि मेरी आँखें कैसी लग रही हैं, मेरा चेहरा कैसा लग रहा है, मेरा शरीर कैसा दिख रहा है। अब देखो क्या है, जो ये देख रही है, उसी को तो हम आत्मा कहते हैं। जो देख रही है इन आँखों द्वारा सारी चीज़ों को और संकल्प भी आत्मा ही के अंदर चल रहे हैं, इसका मतलब शरीर भी आत्मा के अंदर ही है, जैसा वो सोच रही है वैसा उसका स्थूल शरीर दिख रहा है। तो परमात्मा ने हमें बताया कि अब आपको शरीर के कॉन्शियसनेस से नहीं जीना है, आत्मा के कॉन्शियसनेस से जीना है। माना हमें याद रहने लग जाये कि मैं आत्मा एक कंचन काया वाली थी, निरोगी काया वाली थी, सूक्ष्म काया वाली थी, तो ऑटोमेटिकली हमारी आत्मा के अंदर वो बल आता जायेगा, वो सारे संकल्प चलने लग जायेंगे और वैसा ही स्थूल शरीर डेवलप होना शुरु हो जायेगा। ये कोई कोरी कल्पना नहीं है, लेकिन ये सत्य है। इसलिए यहाँ पर बार-बार कहा जाता है कि आपको आत्मिक स्थिति का अभ्यास करना है, लेकिन आत्मिक स्थिति के अभ्यास में ये सारी चीज़ें शामिल हैं। तो जितना हम आत्मिक स्वरूप या

अनादि स्वरूप में रहेंगे, उतना हमारा स्थूल शरीर स्वस्थ और निरोगी बनेगा और जितने समय(लम्बे काल) तक रहेंगे उतने दिनों तक शरीर निरोगी और सुंदर रहेगा, कंचन काया रहेगी।

दूसरा स्वरूप : हमारा जो आदि स्वरूप है, जिसमें हम अपने आप को देवता के स्वरूप में बार-बार देखते हैं कि शुरु से हम मनुष्य थे ज़रूर लेकिन दिव्य गुणधारी थे और दिव्य गुणों की पराकाष्ठा इतनी ज़्यादा थी कि हम सभी को कोई वजीर रखने की आवश्यकता नहीं थी। तो जितनी ज़्यादा दिव्यता हमारे अंदर आयेगी उतनी हमारी विवेक शक्ति(विज़डम) बढ़ जायेगी। तो अगर विवेक शक्ति को लम्बे काल तक रखना है तो हमें आदि स्वरूप का लम्बे काल तक अभ्यास करना है।

तीसरा स्वरूप : पूज्य स्वरूप का अभ्यास जब हम अधिक से अधिक करते हैं तो हमारा भावनात्मक मन अति शक्तिशाली होता चला जाता है। कहा जाता है कि कोई देवी-देवता किसी के यज्ञ-तप से प्रकट होते थे तो उस समय वो सामने वाला व्यक्ति उन्हें देखकर बहुत भावविभोर हो जाता और रोने लगता, उस समय ऐसा नहीं कि देवता भी उसे देखकर रोने लग जायें। लेकिन जब हम किसी को क्लास, कोर्स देते हैं तो हम सभी भावनात्मक रूप से इतने कमज़ोर हो जाते कि हम भी उन्हें देखकर वैसा ही स्वरूप बना लेते हैं। लेकिन हमें ज्ञात हो कि सभी अपने कर्मों के आधार से भावुक हो रहे हैं, दु:खी हो रहे हैं, तो हम क्यों उन्हें देखकर कमज़ोर फील करें! इसलिए जितना अधिक से अधिक हम अपने पूज्य स्वरूप का अभ्यास करेंगे उतना हम इमोशनली स्ट्रॉन्ग होंगे।

चौथा स्वरूप : ब्राह्मण स्वरूप। कहावत है कि जब किसी ब्राह्मण का पैर किसी के घर में पड़ता है तो उस घर में पवित्रता आ जाती है। इसका अर्थ ये हुआ कि ब्राह्मण शुद्ध खान-पान वाला है, हमेशा संयमित जीवन जीने वाला है या परमात्मा की याद में रहने वाला है। इसलिए आप देखो, किसी भी कार्य की शुरुआत में ब्राह्मणों को बुलाया जाता है कि ये आयेंगे तो हमारा कार्य सफल होगा, इसलिए ब्राह्मण सबसे ज़्यादा शुभ हैं और सामाजिक हैं। इसलिए अगर हमें सामाजिक रूप से शक्तिशाली बनना है तो इस स्वरूप का अभ्यास करना है।

पाँचवा स्वरूप : हम सभी कहते हैं ना कि हम सबके लिए सुखदायी हों, सबके लिए अच्छा सोचें, सबके लिए प्रेम भाव रखें, सबके साथ अच्छा व्यवहार करें, सभी को जीवन में वो सबकुछ दें जो हम दे सकें, लेकिन भूल जायें देकर। ये काम फरिश्तों का होता है, जो देते हैं और भूल जाते हैं। इसलिए ज़्यादा से ज़्यादा जो फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास करता है कि मैं इस दुनिया से न्यारा हूँ, माना सब के लिए सोच सकता हूँ, सभी के लिए सुखदायी हूँ, सबको निर्विघ्न बनाने वाला हूँ क्योंकि फरिश्ते किसी को दु:खी नहीं करते, किसी के लिए विघ्न नहीं बनते, वो सभी के लिए सुखदायी होते हैं। इसलिए जो बहुत ज़्यादा फरिश्ता स्वरूप में स्थित होगा वो सबसे ज़्यादा निर्विघ्न बनायेगा। तो इन पाँचों स्वरूपों का अभ्यास इस तरह से समझ के करेंगे तो हमारे सभी युग सुरक्षित हो जायेंगे।

एक नई सोच

जीवन को दो ही तरीके से जिया जा सकता है, तपस्या सा बनाकर या तमाशा बनाकर। तपस्या का अर्थ जंगल में जाकर आँखें बंद करके बैठ जाना नहीं अपितु अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को मुस्कुराकर सहने की क्षमता को विकसित कर लेना है। हिमालय पर जाकर देह को ठंडा करना तपस्या नहीं अपितु हिमालय सी शीतलता दिमाग में रखना ज़रूरी है। किसी के क्रोधपूर्ण वचनों को मुस्कुराकर सह लेना जिसे आ गया, सच, समझ लेना उसका जीवन तपस्या ही बन जाता है। छोटी-छोटी बातों पर जो क्रोध करता है निश्चित ही उसका जीवन एक तमाशा-सा बनकर ही रह जाता है। हर समय दिमाग गर्म रखकर रहना यह जीवन को तमाशा बनाना है। और दिमाग ठंडा रखना ही जीवन को तपस्या-सा बनाना है।

कुरवाई-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आयोजित मोटिवेशनल वर्कशॉप में ब्र.कु. जानकी बहन, ब्र.कु. रिया बहन तथा मोटिवेशनल राइटर पुष्पेन्द्र साहू ने विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। स्कूल की प्राचार्या शाहीना खान एवं शिक्षकगण इस मौके पर उपस्थित रहे।

वाराणसी-उ.प्र.। पावरग्रिड कॉर्पोरेशन उत्तरी क्षेत्र द्वारा वाराणसी के होटल क्लार्क्स में पावरग्रिड के मैनेजर्स और जनरल मैनेजर्स स्तरीय अधिकारियों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला में ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग एवं मैनेजमेंट ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन तथा राजयोगी ब्र.कु. बिपिन भाई ने सभी को सुखी, स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने के टिप्स दिये। इस मौके पर पावर ग्रिड के वरिष्ठ महाप्रबंधक ए.के. राय, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन,उत्तरी क्षेत्र के मानव संसाधन प्रभारी अशोक मिश्रा, लखनऊ के दिनेश पाण्डेय, कार्यक्रम प्रभारी विनोद जी, ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. खुशी, ब्र.कु. गंगाधर भाई, ईशान भाई आदि उपस्थित रहे।

जामखंडी-कर्नाटक। विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. शिवलीला, मल्लप्पा बुजरुखा,एग्रीकल्चर ऑफिसर,जामखंडी, ब्र.कु. शेखर तथा कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

बी.जे.बी. नगर-भुवनेश्वर(ओडिशा)। सूर्यक्षेत्र फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के वार्षिक उत्सव में 'जॉब सर्च सीक्रेट्स' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए मोहन चरण माझी,एमएलए,ओडिशा लेजिस्लेटिव एसेम्बली, डॉ. बिपिन बिहारी मिश्रा,चेयरमैन, राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 10

जब कुछ नया आने वाला होता है या नया वर्ष आने वाला होता है, तो कुछ नये संकल्प या रेज़ोल्यूशन लेकर हम हर बार उतरना चाहते हैं। उतरते भी हैं लेकिन क्रम टूट जाता है तीन-चार दिन के बाद, क्योंकि संकल्प को तीव्रता देने का कार्य सिर्फ दृढ़ता करती है कि कुछ भी हो जाये पर मुझे यह कार्य करना ही है, तो वो कार्य सफल होता जाता है। सफलता वो नहीं है जो कि बहुतों को अपनी बातों से प्रभावित कर दें लेकिन सफलता वो है जो सबको शक्तिशाली बना दे।

परम शक्ति के साथ आविष्कार कर उपकार करें

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

जब कुछ नया आने वाला होता है या नया वर्ष आने वाला होता है, तो कुछ नये संकल्प या रेज़ोल्यूशन लेकर हम हर बार उतरना चाहते हैं। उतरते भी हैं लेकिन क्रम टूट जाता है तीन-चार दिन के बाद, क्योंकि संकल्प को तीव्रता देने का कार्य सिर्फ दृढ़ता करती है कि कुछ भी हो जाये पर मुझे यह कार्य करना ही है, तो वो कार्य सफल होता जाता है। सफलता वो नहीं है जो कि बहुतों को अपनी बातों से प्रभावित कर दें लेकिन सफलता वो है जो सबको शक्तिशाली बना दे। इसीलिए इस बात को समझने में समय लग रहा है कि हम सभी हर बार संकल्प करते हैं कि इस बार ये करेंगे.. इस बार ये करेंगे.. इस बार ये करेंगे.. लेकिन हम हर बार हार खा लेते हैं या कुछ ऊपर-नीचे हो ही जाता है। कहना ये है कि इस तरह कब तक चलेगा? क्योंकि साधन-सुविधा इतने सालों में हमने बहुत उठा लिये, जमा कर लिये, खरीद लिये, अब उसके अधीन भी हम हैं। कल्पना भी हम नहीं कर पाते कि अगर एक दिन नेट न चले तो हमारी क्या हालत होगी! हम दो मिनट में परेशान हो जाते हैं। लेकिन ये नेट, फोन, मोबाइल, ये सारे गैज़ेट्स लैपटॉप सबकुछ आज नहीं तो कल जायेगा ही जायेगा ये पक्का है। जब ये जायेगा ही, तो इसका कुछ पुख्ता इंतज़ाम हम क्यों न कर लें! कुछ इस दुनिया में धार्मिक लोग जो भावना के आधार से नित्य प्रति पूजा-पाठ करके अपने मन को तसल्ली देते हैं कि आज मैंने कुछ किया। लेकिन न शक्ति है, न ही शांति है उनके पास। लेकिन उसी में कुछ आध्यात्मिक लोग भी हैं जो निरंतर कार्य अच्छा कर रहे हैं लेकिन निरंतरता में एक चीज़ मिस है, वो है शक्ति। वो कभी साधनों से यूज़ कर लेते हैं, कभी सुविधा से यूज़ कर लेते हैं, लेकिन वो शक्ति निरंतर हमारे अंदर बनी रहे उसका कुछ परमानेंट उपाय नहीं समझ में आ रहा है। परमात्मा के एक महावाक्य में इसका बहुत सुंदर उत्तर है, कि एक है बुद्धि से सेवा, जिसमें हम बहुत सुंदर तरीके से कोई भी टॉपिक को एक्सप्लेन करते हैं और लोगों को बहुत अच्छा लगता है। दूसरा है, दिल के स्नेह की सेवा। बुद्धि की जो सेवा है उससे व्यक्ति सुनने और सुनाने वाला ज़रूर बन जायेगा लेकिन हमेशा कमज़ोर फील करेगा। लेकिन दिल के स्नेह की सेवा उसको दिलाराम परमात्मा का बनाती है। अब दिल के स्नेह की सेवा का यहाँ पर भावार्थ ये है कि जो परमात्मा की शक्तियों का इस्तेमाल करता है, उसी को सबकुछ मानता है, उसकी सेवा उसको भी शक्तिशाली बनाती है साथ में सामने वाले को भी शक्तिशाली बनाती है। तो अब इस साल का जो दौर है, या जो दौर चलेगा उसमें परमात्म-शक्ति का जो इस्तेमाल करेगा, जो इसका प्रयोग करेगा वो सफलता भी पायेगा और उसके आधार से लोगों के भी भाव और भावना बदलेगी। अब वो समय आ गया है। आज हम साधन-सुविधा, व्यर्थ संकल्पों में इतने ज़्यादा उलझ चुके हैं कि पुराने वर्ष से पहले भी जो पिछले तीन-चार-पाँच साल गये हैं जिसमें नेट ने या इतने सारे एप्स ने हमारे मन को व्यर्थ संकल्पों से भर दिया है, इसलिए शायद शक्तिहीन हैं। इसका उदाहरण हम सबकी स्थितियां हैं। छोटी-छोटी बातों में परेशान होना, नाराज़ होना, अनिद्रा के शिकार होना आदि-आदि। तो क्यों न इस बार हम सिर्फ एक संकल्प लें कि मुझे हर कार्य को दिल के स्नेह से, परमात्म शक्तियों के आधार से, निमित्त भाव से, कल्याणकारी भाव से, लोगों को देने की भावना से सिर्फ करना है, सिर्फ करना ही करना है। इससे फायदा सबसे बड़ा क्या होगा, दुनिया में कहावत भी है और आपको पता भी है कि हमारा यहाँ कुछ भी नहीं है, सबकुछ हमें छोड़कर जाना है। लेकिन उसकी तैयारी शायद नाममात्र है। इसीलिए तो हम डर रहे हैं। लेकिन जब परमात्म-शक्ति का इस्तेमाल होगा, निमित्त पन का भाव होगा, तो हमारा आराम से, इस दुनिया से, पुरानी बातों की भी विदाई होगी, पुराने संस्कारों की भी विदाई होगी और हम भी आराम से यहाँ से जायेंगे निर्संकल्प अवस्था में। तो पुरानी बातों को, पुराने संस्कारों को छोड़ने का मात्र एक आधार है, परमात्म-शक्ति का प्रयोग। क्योंकि हम सब ऐसे ही थे, बंधनमुक्त थे। और वैसा बंधनमुक्त ही हमको बनना है तो आविष्कारक, चमत्कारिक भाव से इस पुराने वर्ष को विदाई देकर नये वर्ष में प्रवेश करना है। तो चलो इस अभियान में जुटते हैं।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मेरा नाम प्रदीप है। कई लोग पूछते हैं कि अगर हम दूसरों को साकाश देंगे तो क्या हमारी शक्तियां कम हो जायेंगी? या हमें बाबा से शक्तियां लेकर देनी चाहिए? या फिर डायरेक्ट बाबा से ही दिलानी चाहिए?

उत्तर : कई लोगों का ये प्रश्न रहता है कि अगर हम दूसरों को वायब्रेशन्स देंगे तो क्या हमारी शक्तियां कम हो जायेंगी? लेकिन नहीं। देने से ये आंतरिक शक्तियां- शांति, खुशी बढ़ती है। देने से कोई चीज़ कम नहीं होती। कहाँ से ये बात चली है ये भी मैं थोड़ा क्लीयर करता हूँ। ये जो रेकी करते हैं वो भी जो ऊपर जिसको कॉस्मिक एनर्जी कहते हैं। लेके फिर देते हैं। तो उन्हें अच्छी फीलिंग होती है। विदेश में बहुत से ऐसे हीलर हुए जो अपनी शक्तियां यूज़ करते रहे और बाद में बहुत कमज़ोर हो गए। उन्हीं बीमारियों के शिकार हो गए। वो लेते नहीं थे। उन्हें लेना नहीं आता था। हमारा जो कनेक्शन है वो है सीधा ऑलमाइटी से कनेक्शन। उसकी शक्तियां हम में आती रहती हैं। और हम दूसरों को देते हैं। हमारा साकाश देने का तरीका भी ये है। हम अपना कनेक्शन शिव बाबा से जोड़ेंगे, उससे हम वायब्रेशन लेंगे और फिर मस्तक से, नैनों से, हाथों से और अपनी गुड विशज़ से हम दूसरों को वायब्रेशन्स देंगे। ये बात बहुत समझने की है कि हमारे वायब्रेशन्स उसी को जायेंगे जिससे हमारा कनेक्शन होगा। अगर किसी को भगवान से वायब्रेशन लेने हैं तो उसे तभी मिलेंगे जब उसका उनसे कनेक्शन होगा।

हम बाबा को कह दें कि बाबा इन्हें वायब्रेशन्स दे दें। तो हो सकता है बाबा हमारे कहने से उनको वायब्रेशन्स दे भी दें। लेकिन वो उनको जायेंगे कैसे? मैंने तो अपना कनेक्शन तोड़ा हुआ है। इसलिए उनको आत्मा देखकर क्योंकि उनसे हम कनेक्टेड हैं। हम उनके पूर्वज हैं। हम उनके देवी-देवतायें हैं। इसीलिए वो सूक्ष्म रूप से हमसे जुड़े हुए हैं। इसलिए हम बाबा से लेंगे और उनको देंगे। दूसरों को वायब्रेशन्स देना इसको दूसरे शब्दों में करेन्ट भी कहते थे। दूसरों को स्पिरिचुअल करेन्ट देना, अच्छे वायब्रेशन देना, किरणें फैलाना इसको साकाश देना कहा जाता है। वैसे भी अध्यात्म का सिद्धान्त ये कहता है कि जितना दोगे उतना बढ़ता जायेगा। ये तो शायद स्थूल चीज़ों से जुड़ी हुई बात है कि चलो मेरे पास एक रूपया था और आपको दे दिया तो मैं कंगाल हो गया। लेकिन आध्यात्मिक रूप से यदि मैं किसी को खुशी, शांति देता हूँ तो मल्टीप्लाय ही होता जाता है।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

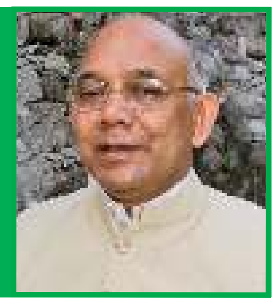

प्रश्न : मेरा नाम जयेन्द्र है। मुझे जुआ खेलने की बहुत आदत पड़ी हुई है। मैं इसमें बहुत पैसा गंवा देता हूँ। मुझे इस आदत से छूटने की विधि बतायें। मैं प्रतिदिन मुरली क्लास में भी नहीं जा पाता हूँ। यद्यपि मैं जाना चाहता हूँ। मेरे अन्दर ये दृढ़ इच्छा है कि मैं एक अच्छा योगी बनूँ। मैं क्या करूँ?

उत्तर : बस इस इच्छा को पूर्ण करने में लग जाएं कि मुझे एक अच्छा योगी बनना है। क्योंकि योग एक ऐसा सब्जेक्ट है जो मनुष्य में अनेक योग्यतायें भर देता है। व्यसनों से उसके जीवन को मुक्त कर देता है। हमें याद दिला देता है तुम तो देव कुल की महान आत्मायें हो। ये जुआ खेलना ये तो तुम्हें शोभा ही नहीं देता है। तो मनुष्य हट जायेगा। ये बहुत बड़ा प्रलोभन है। इसीलिए इसको व्यसन कहा गया। इससे फिर मनुष्य छूट नहीं पाता। लेकिन अगर आपको राजयोगी बनना है, आपको ये स्मृति रहे कि मैं तो भगवान का बच्चा हूँ। भगवान इन चीज़ों को देखता होगा तो उनको कैसा लगता होगा! तो क्या उसे लज्जा नहीं आती होगी! ऐसा सोचकर अपने को ट्रेंड करें। और मैं ये भी कहूँगा कि आप ये पैसा उसमें लगाने की बजाय भगवान के कार्य में लगायें तो इसमें आपका पुण्य जमा होगा। और इस स्वमान मैं तो देवकुल की आत्मा हूँ, मैं तो भगवान की संतान हूँ का दिन में 10 बार अभ्यास करें। अब आपको संकल्प करना होगा कि मुझे तो संसार के लिए कुछ करना है। अपने परिवार के लिए बहुत कुछ अच्छा करना है। जब कोई महान कार्य करना हो तो इन सब चीज़ों को छोड़ना ही होगा। इन सब चीज़ों से बचने का दृढ़ संकल्प यदि हम रखेंगे तो ईश्वरीय मदद हमें मिलेगी। केवल दृढ़ संकल्प की बात है। आप एक बात में दृढ़ हो जायें कि मुझे क्लास में जाना है क्योंकि पाप का दबाव है, वो आपके मन को फ्रेश नहीं रहने दे रहा है। ये सूक्ष्म पाप हैं। ये पाप का दबाव जो होता है ये सूक्ष्म दबाव होता है। ये ईश्वरीय रस नहीं लेने देता है। इसीलिए ये दृढ़ संकल्प कर लें कि मुझे तो बाबा के महावाक्य सुनने जाना ही है। इससे आपको बहुत बल मिलेगा। जिससे आपकी ये चीज़ छूट जायेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 11

सत्यता और सभ्यता द्वारा सर्व सम्बन्धों की अनुभूति

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई-सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

सच्चाई और सफाई - सच्चाई अर्थात् मैं जो हूँ, जैसा हूँ सदा उस ओरिज़नल सत्य स्वरूप में स्थित होना। अर्थात् आत्मा के ओरिज़नल स्वरूप में स्थित रहना है। रजो और सतो स्टेज सच्चाई की ओरिज़नल स्टेज नहीं। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है।

दूसरी बात - बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात् सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है व अभी रजो और तमो मिक्स है। सत्यता नैचुरल संस्कार रूप में है व पुरूषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है। जैसे बाप को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् ट्रुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है?

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चचंल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि में चंचलता होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में, सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए।

मुम्बई-विलेपार्ले। फिल्म सिटी गोरेगांव में कौन बनेगा करोड़पति के सेट पर सुपरस्टार सुप्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन जी को वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. क्रीना बहन व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने ईश्वरीय परिचय के साथ ईश्वरीय सौगात और टोली(प्रसाद) भेंट की और संस्था की गतिविधियों से अवगत कराने के बाद माउण्ट आबू आने का ईश्वरीय निमंत्रण दिया। इस अवसर पर ब्र.कु. विहान अनिकेत हरके भी उपस्थित रहे।

झज्जर-हरियाणा। गीता जयंती महोत्सव कार्यक्रम के दौरान एस.पी. वसीम अकरम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना बहन।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई जी की छठवीं पुण्य तिथि पर आयोजित मीडिया परिसंवाद में अपने विचार रखते हुए कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता वि.वि. के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा। साथ में उपस्थित हैं क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, दैनिक भास्कर के सम्पादक शिव दुबे, सहारा समय की राज्य प्रमुख प्रियंका कौशल, वरिष्ठ पत्रकार रमेश नैयर, बिजनेस स्टैण्डर्ड के राज्य प्रमुख आर.कृष्णा दास जी और ब्र.कु. मंजू दीदी।

कामठी-महा.। सीडीएस जनरल बिपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत सहित 12 सैन्य अधिकारियों की आत्मा की शांति के लिए आयोजित श्रद्धांजलि सभा में आर्मी के ऑफिसर ट्रेनिंग सेंटर एकेडमी के ब्रिगेडियर एच.आर.देसाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, डॉ. राजेन्द्र अग्रवाल, वैज्ञानिक अधिकारी डॉ. वाचस्पति पांडेय, महेन्द्र ठाकुर, ब्र.कु. विवेक तथा सभा में उपस्थित सैकड़ों लोगों ने मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

समस्तीपुर-बिहार। शहीद सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत जी के निमित्त आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में मौन रहकर शिव परमात्मा की स्मृति में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश दशरथ मिश्र, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. कृष्ण, 12 बिहार बटालियन के सूबेदार मेजर के.एम. थापा तथा हवलदार विनय कुमार ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत वेबिनार का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर किया गया। साइकिल रैली का आयोजन आध्यात्मिक ऊर्जा पार्क तुलसीनगर गेरवाघाट से प्रारम्भ कर अंचल में विभिन्न स्थानों में जन जाग्रति के लिए आयोजित की गई। आयोजित वेबिनार में जुड़े रेडियो मधुबन 90.4 एफ एम आबू पर्वत के आर.जे. रमेश, एसएम मिश्रा,मुख्य माईनिंग प्रबंधक एस.ई.सी.एल कोरबा, ब्र.कु. बिन्दु बहन तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रुकमणी दीदी।

रतलाम-डोंगरे नगर। ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी एवं रतलाम सेवाकेन्द्र की पूर्व संचालिका ब्र.कु. सरला दीदी के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ऑनलाइन शरीक हुए। स्थानीय मुख्य सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, चौथा रास्ता समाचार पत्र के संपादक मिश्रीलाल सोलंकी, मेडिकल कॉलेज की नेत्र विशेषज्ञा डॉ. मधु शर्मा, इंडिया एक्सप्रेस 24 न्यूज़ चैनल के प्रधान संपादक गोवर्धन चौहान, ब्र.कु. सावित्री दीदी, ब्र.कु. गीता दीदी, राजेन्द्र पोरवाल, पंकज माहेश्वरी, अनिल तलोदिया, रॉय सिंह राठौड़, अशोक कौशल, नरेन्द्र माहेश्वरी, महेन्द्र कौशिक तथा अन्य सभी भाई-बहनों ने भाई जी और दीदी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

मुन्द्रा-कच्छ(गुज.)। अदानी विल्मर प्रैग्पर,मुन्द्रा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'सकारात्मक जीवन शैली एवं मूल्य आधारित प्रशासन' विषयक कार्यक्रम में ब्र.कु. हरीश,नेशनल कोऑर्डिनेटर,एडमिन विंग,ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू, राजयोगिनी ब्र.कु. सुशीला दीदी,मुन्द्रा सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. मधु दीदी,बांटवा सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. विजय भाई, ब्र.कु. विनोद भाई, ब्र.कु. आमोद, ब्र.कु. चम्पा,पोरबंदर, सतीश नायर,जीएम,एचपीसीएल,मुन्द्रा टर्मिनल, भरत जी,सीनियर मैनेजर,एचपीसीएल टर्मिनल,मुन्द्र तथा एचपीसीएल एक्ज़ीक्युटिव्स उपस्थित रहे।

चुनार-उ.प्र.। स्थानीय सेवाकेन्द्र के ब्र.कु. भाई-बहनों एवं पड़ही गांव के ब्रह्माकुमारीज़ गीता पाठशाला के भाई-बहनों द्वारा विश्व मृदा दिवस पर पौधे लगाकर जैविक खाद डाला गया व शिव ध्वज लगाकर योग किया गया। इस मौके पर पड़ही गांव के प्रधान रामदेव सरोज, विश्व हिन्दू परिषद् के सदस्य अमित ओझा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बीनू बहन, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. तारा, डॉ. रीति सिंह, डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. जीतेन्द्र सिंह तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

लुधियाना-पंजाब। लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने और खेलों में मेडिटेशन के अभ्यास के महत्व को साझा करने की दृष्टि से ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कबड्डी खेल मेला,फूलनवाल,लुधियाना में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर कबड्डी मेले के मुख्य अतिथि कैप्टन संदीप सिंधु, ब्र.कु. रुचिका तथा बड़ी संख्या में खिलाड़ी व लोग मौजूद रहे।

नई दिल्ली-आर.के. पुरम। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत डिफेन्स अकाउंट्स बोर्डर रोड्स द्वारा सीमा सड़क भवन में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजयोग मेडिटेशन सत्र एवं आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. अनीता बहन, देविका रघुवंशी बहन, डी.सी.एस. नेगी, डिफेन्स अकाउंट्स बोर्डर रोड्स के अधिकारी एवं सहकर्मियों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

सटाना-बुरहानपुर। विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में रामदास पाटील,अरबी हर्बल एग्रो कंपनी के प्रेसिडेंट,खेत ज़मीन में मीमांसा प्रयोगशाला के अध्यक्ष,महाराष्ट्र बायो कंट्रोल मैन्युफैक्चर एसोसिएशन के प्रेसिडेंट एवं राहुरी विद्यापीठ के शिक्षा मंडल के अध्यक्ष, ब्र.कु. अंजू लता बहन, ब्र.कु. रूशाली बहन, ब्र.कु. वसंत भाई तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

OM - 20- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/29/2021 12:05 PM Page 12

'दिव्य प्रकाश सरोवर' भूमि पूजन

जलगांव-महा.। शांति, शक्ति तथा दिव्य गुणों का प्रकाश स्तम्भ बनकर मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाने का कार्य दिव्य प्रकाश सरोवर द्वारा होगा। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ उपक्षेत्र द्वारा नियोजित दिव्य प्रकाश सरोवर ट्रेनिंग सेंटर के भूमिपूजन कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने व्यक्त किये।

उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. मिनाक्षी दीदी ने कहा कि दिव्य प्रकाश सरोवर द्वारा व्यसनमुक्त, अवगुणमुक्त निर्विकारी समाज के निर्माण का कार्य होगा। भूमि शुद्धिकरण कार्यक्रम में मेजर नाना वाणी,अध्यक्ष,भगीरथ इंग्लिश स्कूल, ब्र.कु. डॉ. सोमनाथ वडनेरे, धीरज भाई सोनी, डॉ. किरण पाटील, राधेश्याम मुंदड़ा, शोभा मुंदड़ा, नगरसेवक पिंप्राला, सरपंच सावखेडा व अन्य गणमान्य लोगों सहित माउण्ट आबू व स्थानीय ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। ब्र.कु. वर्षा बहन ने सभी का स्वागत किया। मंच संचालन ब्र.कु. प्रांजली बहन व ब्र.कु. अश्विनी बहन ने किया।

तीन एकड़ में बनेगा रिट्रीट सेंटर

इस सेवा प्रकल्प के प्रथम चरण में बड़ा ऑडिटोरियम, कॉन्फ्रेन्स हॉल, शिवबाबा का भण्डारा, किचन, आवासीय व्यवस्था, लॉन, बगीचे आदि की व्यवस्था होगी। दूसरे चरण में अत्याधुनिक तकनीकी के साधनों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनियों का अवलोकन, म्युज़ियम आदि, व्यसनमुक्ति के लिए आध्यात्मिक परामर्श क्लिनिक, मेडिकल सहायता के लिए एवर हेल्दी डिस्पेन्सरी, मीडिया सर्विस सेंटर, यौगिक खेती अनुसंधान, मूल्य शिक्षा तथा अन्य प्रभाग की गतिविधियां भी चलेंगी।

'ए रिट्रीट टू री-कनेक्ट, री-चार्ज एंड रेज्युवनेट'

फिनान्स प्रोफेशनल्स के लिए मेडिटेशन रिट्रीट

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा फिनान्स प्रोफेशनल्स के लिए 'ए रिट्रीट टू री-कनेक्ट, री-चार्ज एंड रेज्युवनेट' विषय पर दो दिवसीय मेडिटेशन रिट्रीट के उद्घाटन में केज़ाला मोहम्मद बसवारी,एक्टिंग एम्बेसडर,यूगांडा हाई कमिशन, राजेश्वर सिंघल,रिटा.आई.ए.एस. ऑफिसर, सी.ए. रोहित वाशवानी,प्रेसीडेंट,भारतीय विट्टा सलाहकार समिति,दिल्ली, प्रेम गोलानी,वाइस प्रेसीडेंट,येस बैंक, रमन त्यागी,चीफ मैनेजर,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, नेहा वाधवा,डायरेक्टर, अमेरिकन एक्सप्रेस, निशा कालरा,असिस्टेंट वाइस प्रेसीडेंट, बार्क्लेज़, मनोज,ईपीएफओ कमिश्नर, फरीदाबाद तथा श्रीमति मिनाक्षी सिंघल,प्रिन्सीपल,पाथवेज़ वर्ल्ड स्कूल गुरूग्राम आदि गणमान्य अतिथियों सहित ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. येशू बहन, ब्र.कु. हुसैन बहन आदि उपस्थित रहे। रिट्रीट के दौरान ब्र.कु. आशा दीदी ने सभी को ब्रह्माकुमारी संस्थान एवं इसकी गतिविधियों से

परिचित कराया। ब्र.कु. दिव्या बहन ने 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषयक सत्र को सम्बोधित किया। 'कनेक्टिंग विद् योरसेल्फ' एंड 'नोइंग द सुप्रीम' विषय पर ब्र.कु. लक्ष्मी बहन ने अपने विचार रखे। 'रीचार्जिंग योरसेल्फ थ्रू मेडिटेशन' विषय पर ब्र.कु. रमा बहन ने सभी का ध्यान आकर्षित किया तथा जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने 'रेज्युवनेट योरसेल्फ' विषय पर सम्बोधित करते हुए आज के परिदृश्य में मेडिटेशन को जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया।

इसके साथ ही सभी प्रतिभागियों के लिए इंटेरेक्टिव वर्कशॉप, प्रश्न-उत्तर सत्र, सामूहिक वाद-विवाद सत्र, विभिन्न खेल सत्र, राजयोग मेडिटेशन आदि सत्रों का आयोजन किया गया।

गवर्नमेंट, सेमी-गवर्नमेंट, कॉर्पोरेट सेक्टर्स तथा अन्य कार्य क्षेत्र से फिनान्स एंड बैंकिंग प्रोफेशनल्स हुए शामिल

'स्व-सशक्तिकरण से राष्ट्र-सशक्तिकरण'

अभियान का विश्व शांति भवन में भव्य स्वागत

भरतपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित दिल्ली से अहमदाबाद तक जाने वाले 'स्व-सशक्तिकरण से राष्ट्र-सशक्तिकरण' अभियान के स्थानीय सेवाकेंद्र विश्व शांति भवन पहुँचने पर रिटायर्ड कर्नल आयोजित किये गए। राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी,सह प्रभारी,आगरा सबज़ोन, जिला प्रभारी भरतपुर ने कहा कि अभियान का लक्ष्य सुरक्षा बलों को आंतरिक रूप से सशक्त करना है। आंतरिक सशक्तिकरण ही वर्तमान

ओमवीर, कर्नल तेजराम द्वारा अभियान यात्रियों का पुष्पों से स्वागत किया गया। इसके अंतर्गत जगह-जगह जैसे पुलिस ट्रेनिंग स्कूल बांसी खुर्द भरतपुर, एनसीसी, एमएसजे कॉलेज भरतपुर, 7वीं आरएसी बटालियन भरतपुर, सेंट्रल जेल सेवर भरतपुर, टेक्नोलॉजी पार्क सेवर आदि स्थानों पर कार्यक्रम चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने की सहज विधि है। अभियान की ग्रुप लीडर ब्र.कु.अस्मिता बहन,रानी,पाली ने बताया कि जैसे मोबाइल को चार्ज करने के लिए पॉवर की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा को चार्ज करने के लिए मेडिटेशन की आवश्यकता है। अभियान यात्री ब्र.कु. मिनाक्षी बहन,दिल्ली, रिटार्ड कर्नल ब्र.कु. आर एम. सिंह तथा ब्र.कु. हेम सिंह,माउण्ट आबू ने भी अपने विचार रखे। ब्रजेश चौधरी,कमांडेंट, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल बांसी, देवेंद्र बिश्नोई, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक,भरतपुर, ब्रजेश उपाध्याय,आईपीएस,सीओ, ग्रामीण भरतपुर, विवेक शर्मा, प्रिंसिपल, एमएसजे कॉलेज भरतपुर, कर्नल हरवीर सिंह,एनसीसी यूनिट,एमएसजे कॉलेज भरतपुर, आलोक शर्मा,डायरेक्टर,श्री हरिदत्त ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूट सेवर, राकेश फौजदार,समाज सेवी, डॉ. सुदर्शना सोलंकी,वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, अभिषेक शर्मा,उप अधीक्षक,सेवर जेल, होतीलाल,कार्य वाहक,दंड पालक 7वीं आरएसी ने भी अपनी शुभकामनायें दी एवं अभियान यात्रियों को शॉल, मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। ब्र.कु. प्रवीणा बहन एवं ब्र.कु. गीता बहन ने राजयोग का अभ्यास कराया। सभी यात्रियों को विश्व शांति भवन से रूहानी सेना नायकों के ख़िताब से नवाज़ कर अगले पड़ाव के लिए भावभीनी विदाई दी गई।

सच्चे 'जीवन लक्ष्य' की प्राप्ति यहाँ

जयपुर-वैशाली नगर (राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के वैशाली नगर सेवाकेन्द्र के चौबीसवें वार्षिकोत्सव में जिला प्रमुख रमा चोपड़ा ने कहा कि ब्रह्माकुमारियों द्वारा किये जा रहे सतयुग निर्माण कार्य में मैं सदा साथ हूँ और सभी से निवेदन करती हूँ कि वे भी इस महान कार्य में अपनी भागीदारी निभाएं। आई.ए.एस. जे.सी. मोहन्ती ने कहा कि इस संस्थान द्वारा जीवन में उलझे हुए मनुष्य को सच्चे जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति होती है और जीवन में दिव्यता का समावेश होता है। क्षेत्रीय पार्षद प्रवीण यादव ने कहा कि आज समाज में बढ़ रही सामाजिक बुराइयों को मिटाने में आध्यात्मिकता आवश्यक है जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ की महान भूमिका है। हमें ऐसे ही अनेक भवनों का

निर्माण कर मानव के चरित्र उत्थान के कार्य को आगे बढ़ाना है। विश्व धर्म चेतना मंच जयपुर ब्रांच के चेयरमैन संजय शर्मा ने कहा कि यहाँ जो आत्मजागृति का अभियान चलाया जा रहा है वह अति महानतम कार्य है जिसमें पूरी मानव जाति को अपना सम्पूर्ण सहयोग देना चाहिए। इस मौके पर दाना शिवम् अस्पताल के डायरेक्टर एस.पी. यादव, डॉ. साधना शंकर, मोती चोपड़ा, आई.ए.एस. कृष्ण कुमार आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में पिछले दस दिनों से विविध कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं, जिनके विजेता भाई-बहनों को पुरस्कृत किया गया।

खुशनुमा जीवन के लिए मूल्याधारित जीवन आवश्यक

छतरपुर-म.प्र.। आज बदलते ज़माने के साथ लोगों के विचारों में भी बदलाव आ गया है। जब हम सुबह उठते हैं तो सबसे पहले अपने मोबाइल में व्हाट्स एप्प चेक करते हैं और सबको गुड मॉर्निंग का मैसेज भेजते हैं, लेकिन यदि गुड मॉर्निंग का उत्तर नहीं मिलता तो बैड मॉर्निंग हो जाती है। इसलिए हमें सबसे पहले उठकर परमपिता परमात्मा, उस सर्वोच्च सत्ता को गुड मॉर्निंग करना चाहिए जिसने हमें एक नई सुबह दी है, यह जीवन प्रदान किया है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा होमगार्ड एवं नागरिक सुरक्षा के जवानों के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. कल्पना बहन ने व्यक्त किये। ब्र.कु. रमा ने कहा कि जीवन को खुशनुमा बनाने के लिए

मूल्य आधारित जीवन जीना आवश्यक है। ब्र.कु. रीना ने बताया कि खुशी हमारी अंतर चेतना में समाई हुई है इसलिए खुशी प्राप्त करने के लिए हमें समय निकाल कर स्वयं से मुलाकत करना चाहिए ताकि हम उस खुशी को अंदर से जागृत कर सकें। कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट होमगार्ड करन सिंह, प्लाटून कमांडर संजय गौड़ सहित 40 जवानों ने भाग लिया व अवसर का भरपूर लाभ व आनंद उठाया।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा होमगार्ड एवं नागरिक सुरक्षा के जवानों के लिए किया गया मोटिवेशनल कार्यक्रम

'खुशी का आधार तनाव मुक्त जीवन' विषय पर बहनों द्वारा दिये गये सम्बोधन व टिप्स

डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट सहित 40 जवान हुए शामिल

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Jan, 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - श्री मुकेश मंगल, डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org